



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

उपदेश

जे अणांचारी थका आचार बतावें,
ते यूँही अन्हाखी कूकें।
जाणें गायां तणां टोलारे माहिं,
निकेवल गधा ज्यूं भूके।।

जो स्वयं आचारहीन है और दूसरों को
आचार का उपदेश देता है वह व्यर्थ ही
बकवास कर रहा है। ऐसा लगता है मानो
गौओं के टोले में गधा रेंक रहा है।

- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

वर्ष 27 • अंक 33 • 18 मई - 24 मई 2026



प्रत्येक सोमवार

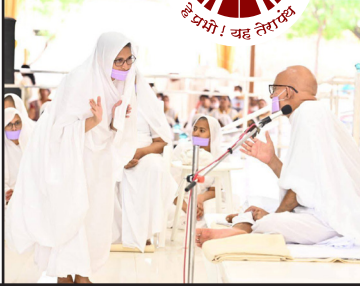
प्रकाशन तिथि : 16-05-2026 • पेज 12

₹ 10 रुपये



गुरु की आज्ञा में रहना ही
वास्तविक गुरुकुलवास,
मीठी वाणी है वशीकरण
मंत्र : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02



भवसागर तैर लिया तो अब
किनारे पर क्यों खड़े हो?
प्रमाद छोड़कर पार उतरो :
आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address
Here

विकसित भारत के लिए भौतिक प्रगति के साथ आध्यात्मिक व नैतिक उत्थान अनिवार्य : आचार्यश्री महाश्रमण

संत वही जो सदैव शांत रहे; संयम, तप और
क्षमा ही है ऋषित्व की असली पहचान

विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने गुरुचरणों में की अभिवंदना;
आचार्यश्री ने दिया देश के विकास हेतु 'पंच-मुखी' प्रगति का महामंत्र

लाडनू।

12 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'ऋषि कैसे हों?' विषय पर अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि साधुता केवल एक वेष नहीं, बल्कि अनंत काल की यात्रा की महानतम उपलब्धि और संयम की पराकाष्ठा है।

साधु : पंच महाव्रतों की जीवंत मूर्ति : आचार्य प्रवर ने साधु जीवन की अनिवार्यताओं को रेखांकित करते हुए फरमाया कि एक ऋषि को अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह— इन पांच महाव्रतों का मन, वचन व काया से पालन करना चाहिए। साधु न हिंसा करता है, न करवाता है और न



ही अनुमोदना करता है। रात्रि भोजन का त्याग और कंचन-कामिनी (धन-संपत्ति व काम वासना) से पूर्ण विरक्ति ही साधु को 'अपरिग्रह की मूर्ति' बनाती है।

क्षमा और शांति ही साधु का आभूषण : शांतिदूत ने संतत्व को

परिभाषित करते हुए फरमाया— 'संत वही है, जो शांत है।' साधु के जीवन में क्रोध, आवेश और प्रदर्शन का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। यदि कोई अवहेलना या अपशब्द भी कहे, तो साधु को क्षमा धारण कर महान प्रसन्नता (प्रसाद) के

”

संतत्व का अर्थ है
परम शांति; क्रोध और
प्रदर्शन से मुक्त हो
साधु का जीवन
-आचार्यश्री महाश्रमण

भाव में रहना चाहिए। साधु का दृष्टिकोण उदार हो, वह आग्रही न बने और दूसरों के उचित विचारों को ग्रहण करने का साहस रखे।

साध्वी शकुंतला जी का दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष : इस अवसर पर साध्वी शकुंतला जी के दीक्षा के 50 वर्ष संपन्न होने पर आचार्यश्री ने मंगल प्रेरणा प्रदान की। साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा

जी ने साध्वी श्री के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना व्यक्त की। साध्वी शकुंतला जी ने भी गुरुदेव के समक्ष अपनी विनम्र श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

देश के विकास हेतु 'पंच-मुखी' सूत्र : मंगल प्रवचन के दौरान विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने आचार्यश्री के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर पूज्य प्रवर ने राष्ट्र निर्माण हेतु पांच अनिवार्य स्तंभ बताए: १. भौतिक विकास, २. आर्थिक विकास, ३. शैक्षिक विकास, ४. आध्यात्मिक विकास, ५. नैतिक विकास

आचार्यश्री ने बल दिया कि भारत के नागरिकों में धर्म के संस्कार, नशामुक्ति और त्याग की भावना का विकास होना चाहिए।

(शेष पेज 9 पर)

स्वयं तरें और दूसरों को तारें, श्रुत का अभ्यास ही है आध्यात्मिक पुरुषार्थ : लाडनू में गुंजी पावन देशना

श्रुत की आराधना ही है मोक्ष का सत्य, साधना के लिए करें जानार्जन : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

11 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज 'श्रुतभ्यास क्यों करें?' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने शास्त्रों के अध्ययन को मोक्ष प्राप्ति का सशक्त

माध्यम बताते हुए इसे स्व-पर कल्याण का आधार बताया।

उत्तम अर्थ की खोज और श्रुत का आश्रय : आचार्य प्रवर ने प्रवचन की शुरुआत में एक मूलभूत प्रश्न खड़ा किया—श्रुत का आश्रयण कौन ले और क्यों ले? शास्त्रकार के वचनों को उद्धृत करते हुए उन्होंने फरमाया कि जो 'उत्तम अर्थ' की खोज में है, उसे श्रुत का आश्रय लेना

चाहिए। यहाँ उत्तम अर्थ से तात्पर्य 'मोक्ष' से है। उन्होंने चार पुरुषार्थों का विश्लेषण करते हुए फरमाया कि 'काम-अर्थ' सांसारिक युगल हैं, जबकि 'धर्म-मोक्ष' आध्यात्मिक युगल। इन चारों में मोक्ष ही परम साध्य है, जिसे प्राप्त करने के लिए ज्ञान का अभ्यास अनिवार्य है।

श्रुताभ्यास के बहुआयामी लाभ: श्रुत की महत्ता को प्रतिपादित करते

हुए आचार्यश्री ने इसके व्यावहारिक और आध्यात्मिक लाभ गिनाए:

१.विवेक की जागृति: शास्त्रों के अध्ययन से साधक में कल्पनीय-अकल्पनीय और करणीय-अकरणीय (क्या करना चाहिए और क्या नहीं) का विवेक जागृत होता है।

२.स्व-पर कल्याण: ज्ञान संपन्न साधक स्वयं सन्मार्ग पर चलता ही है। (शेष पेज 9 पर)



गुरु की आज्ञा में रहना ही वास्तविक गुरुकुलवास, मीठी वाणी है वशीकरण मंत्र : आचार्यश्री महाश्रमण

■ प्रियंकर और प्रियवादी बनें विषय पर शांतिदूत का पावन पाथेय ■ प्रिय आचरण और मधुर वचन: सफलता के दो अचूक मंत्र

लाडनू।

09 मई, 2026

जैन विश्व भारती के पावन परिसर में 'योगक्षेम वर्ष' के अंतर्गत आयोजित आध्यात्मिक प्रकल्प जन-जन में नई ऊर्जा का संचार कर रहे हैं। इसी कड़ी में आज तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने 'प्रियंकर और प्रियवादी बनें' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को संबोधित करते हुए शिक्षा प्राप्ति की अनिवार्य अर्हताओं पर प्रकाश डाला।

गुरुकुलवास : आज्ञा और सन्निधि का संगम : शिक्षा कौन प्राप्त कर सकता है? इस प्रश्न का समाधान करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि जो 'गुरुकुल' में वास करता है, वही वास्तविक ज्ञान का अधिकारी है। गुरु सन्निधि में रहने का अर्थ केवल शारीरिक निकटता नहीं, बल्कि गुरु की आज्ञा के प्रति पूर्ण समर्पण है। जो शिष्य गुरु की आज्ञा में जागरूक नहीं, वह निकट रहकर भी गुरुकुलवास से बाहर है। गुरुकुलवास में रहने से



व्याख्यान और क्षेत्र-संभाल जैसी बाह्य जिम्मेदारियों से मुक्ति रहती है, जिससे ज्ञानार्जन, चरित्र निर्मलता और दर्शन की स्थिरता हेतु पर्याप्त समय और विशेषज्ञों का मार्गदर्शन सुलभ हो जाता है।

व्यवहार कौशल : प्रियंकर और प्रियवादी गुण : आचार्यश्री ने उत्तराध्ययन सूत्र के आलोक में फरमाया कि जो प्रिय

व्यवहार करने वाला (प्रियंकर) और मधुर बोलने वाला (प्रियवादी) है, वही शिक्षा का पात्र है। गुरुदेव ने व्यावहारिक शिष्टाचार के सूत्र देते हुए फरमाया:

सम्मानजनक शब्दावली : बड़ों के प्रति 'बोलो' के स्थान पर 'फरमाओ' या 'कृपा कराई' जैसे गरिमापूर्ण शब्दों का प्रयोग आचरण को ऊंचाई देता है।

मधुर भाषी : मीठा बोलना एक वशीकरण मंत्र है, जो सुख और सौहार्द उत्पन्न करता है। सत्य के साथ प्रियता का योग सदैव बना रहना चाहिए।

विनय और वात्सल्य : छोटों का बड़ों के प्रति विनय और बड़ों का छोटों के प्रति वात्सल्यपूर्ण व्यवहार ही जैन आगमों का मूल व्यवहार कौशल है।

ज्ञान और चरित्र का अक्षय भंडार है गुरुकुलवास -आचार्यश्री महाश्रमण

साधना और शांति का संदेश : आचार्य प्रवर ने आह्वान किया कि क्रोध का परित्याग कर अपनी बात शांति से रखने का प्रयास करना चाहिए। जीवन सदैव आध्यात्मिक मूल्यों और औचित्य से ओतप्रोत रहे, तभी शिक्षा की सार्थकता है।

भावाभिव्यक्ति एवं संवाद प्रस्तुति: मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्यश्री की अभिनंदना में साध्वी कुसुमप्रभा जी और साध्वी सम्यकप्रभा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी वृंद द्वारा प्रस्तुत सामूहिक संवाद ने सभा को आध्यात्मिक संदेश से भावविभोर कर दिया।

शंख में दूध की भांति शोभित होता है ज्ञान और संयम का संगम : आचार्यश्री महाश्रमण

साधु की महिमा ज्ञान से, ज्ञान की महिमा साधु से : युगप्रधान की तात्विक देशना

लाडनू।

10 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आज 'बहुश्रुत की महिमा' विषय पर पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने ज्ञानार्जन हेतु किए जाने वाले कठोर श्रम और संयम को रेखांकित करते हुए चरित्रात्माओं को आगमों के गहन स्वाध्याय हेतु प्रेरित किया।

श्रम और संयम से खिलता है 'बहुश्रुत' का पद : आचार्य प्रवर ने फरमाया कि बहुश्रुत होना एक साधु का विशेष गुण है। हजारों पद्यों को कंठस्थ करने और उस ज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए निरंतर 'चितारने' (दोहराने) में भारी श्रम और समय लगता है। पूज्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि यद्यपि वर्तमान युग में पूर्वों का ज्ञान



रखने वाले उत्कृष्ट बहुश्रुत की आशा कम है, फिर भी यदि किसी को आगमों का अच्छा ज्ञान है, समझाने की शैली प्रभावशाली है और समसामयिक विषयों का बोध है, तो वह भी एक प्रकार से बहुश्रुत ही है।

आचार्य पद में ही समाहित हैं उपाध्याय और साधु पद : पंच परमेष्ठी के पदों की व्याख्या करते हुए आचार्यश्री

ने एक महत्वपूर्ण तथ्य रखा। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य भिक्षु से लेकर अब तक किसी को अलग से उपाध्याय पद नहीं दिया गया है, क्योंकि आचार्य के तीसरे पद में ही उपाध्याय और साधु पद समाविष्ट हैं। आचार्य की 'अष्टगणी संपदा' में श्रुत संपदा का विशेष महत्व है। आचार्य जब स्वयं आगमों की वाचना देते हैं, तो उससे

शिष्यों का मार्गदर्शन होने के साथ स्वयं का भी स्वाध्याय होता है।

शंख और दुग्ध सा धवल हो ज्ञान व आचरण : उत्तराध्ययन सूत्र के ग्यारहवें अध्ययन का उदाहरण देते हुए गुरुदेव ने फरमाया कि जिस प्रकार शंख में दूध शोभा देता है, उसी प्रकार एक बहुश्रुत साधु में ज्ञान के साथ-साथ साधना पक्ष भी सबल होना चाहिए। यहाँ दूध (ज्ञान) और उसका आधार शंख (साधु) दोनों ही स्वच्छ होने चाहिए। साधु की महिमा ज्ञान से है और ज्ञान की महिमा साधु के पवित्र आचरण से होती है।

खमतखामणा एवं अभिवंदना : मंगल प्रवचन के उपरांत गुरुकुलवास (गुरु सन्निधि) में बाद में पधारी साध्वी गवेषणाश्री जी, साध्वी निर्मलयशा जी, साध्वी पीयूषप्रभा जी एवं साध्वी विद्यावती जी (प्रथम) की सहवर्ती साध्वियों ने

कंठस्थ ज्ञान और निरंतर स्वाध्याय ही है बहुश्रुत बनने की असली कसौटी -आचार्यश्री महाश्रमण

मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार जी एवं अन्य अग्रगणी संतों से 'खमतखामणा' (क्षमापना) की। संतों की ओर से मुनि धर्मरुचि जी स्वामी ने साध्वियों से क्षमा याचना की। कार्यक्रम के अंत में साध्वी मलयप्रभा जी, साध्वी राजश्री जी, साध्वी ऋजुप्रज्ञा जी और मुनि ऋषिकुमार जी ने गीतों व वक्तव्यों के माध्यम से अपने आराध्य की वंदना की।

युवालोक कार्यालय का भव्य शुभारंभ

विजयनगर, बेंगलोर।

तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में परिषद् कार्यालय "युवालोक" का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से मागडी रोड स्थित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर परिसर में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। जैन संस्कार विधि के अंतर्गत परिषद् से भंवरलाल मांडोट, संपत चावत, अभिषेक कावड़िया, पवन बैद, कमलेश चोपड़ा, विनय पितलिया, श्रेयांस गोलछा एवं धीरज उभादानी ने संस्कारक की भूमिका निभाते हुए निर्धारित विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम को संपन्न करवाया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट ने रिबन खोलकर एवं द्वार पर



स्वस्तिक अंकन कर कार्यालय का विधिवत शुभारंभ किया। तेरापंथ महासभा उपाध्यक्ष प्रकाश लोढ़ा, टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिममत माण्डोट, अभातेयुप संगठनमंत्री रोहित कोठारी, अणुविभा संगठन मंत्री राजेश चावत, तेरापंथ सभा विजयनगर अध्यक्ष मंगल कोचर, एवं परिषद् के पूर्व अध्यक्षगण उपस्थित रहे। सभी गणमान्यजनों ने तेयुप



विजयनगर द्वारा "युवालोक" कार्यालय शुभारंभ हेतु मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष विकास बांठिया ने उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए अभातेयुप द्वारा निर्देशित सेवा, संस्कार एवं संगठन के आयामों को पूर्ण करने हेतु सभी के सहयोग हेतु साधुवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर एटीडीसी सह

प्रभारी अमित दक, राकेश पोखरणा, परामर्शकगण, अभातेयुप परिवार एवं तेयुप प्रबंध मंडल से प्रदीप बाबेल, पवन बैद, मनीष चावत, कमलेश चोपड़ा सहित परिषद् के पूर्व अध्यक्षगण, अन्य परिषदों से प्रसन्न धोका, स्वरूप चोपड़ा, राकेश चावत, कार्यकारिणी सदस्य, ज्ञानशाला परिवार एवं श्रावक समाज की विशेष उपस्थिति रही।

वर्षीतप पारणा का आयोजन

कोयंबतूर। वर्षीतप पारणे का कार्यक्रम ग्लोबस नक्षत्रा अपार्टमेंट के क्लब हाउस में साध्वी सिद्धप्रभाजी आदि ठाणा-4 के सानिध्य में आयोजित किया गया। साध्वी आस्थाप्रभा जी ने ओम् ऋषभाय नमः के जप से कार्यक्रम की शुरुआत की। बहनों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। तत्पश्चात सभा अध्यक्ष देवीचंद मंडोट ने तपस्वी बहनो एवं परिषद् में पधारे सभी भाई-बहनों का स्वागत अभिनंदन किया। महिला मंडल अध्यक्ष रूपकला भंडारी, तिरुपुर से विनोद भंसाली, उपासिका बहन सुशीला बाफना, साध्वी दीक्षाप्रभा जी के भाई वैभव ने अपनी भावपूर्ण भावाभिव्यक्ति दी। मुमुक्षु संयम बाफना ने भी कहानी के माध्यम से अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ सभा कोयंबतूर द्वारा मुमुक्षु संयम बाफना का माला एवं शॉल से अभिनंदन किया गया। साध्वी दीक्षाप्रभा जी के वर्षीतप के उपलक्ष में पूज्य प्रवर एवं साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी का संदेशवाचन धनराज सेठिया ने किया।

जगन्नाथ धरा पर मुनिवरों का स्वागत

ओडिशा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के निर्देशानुसार सुशिष्य मुनि मोहजीतकुमार जी सहवर्ती मुनि भव्य कुमार जी, मुनि जयेशकुमार जी ने ओडिशा राज्य की सीमा में प्रवेश किया। सीमा पर कटक तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ किशोर मण्डल तथा अनेक कार्यकर्ताओं ने मुनिवरों का भावभीना स्वागत किया। उत्कल भारती स्कूल प्रांगण में आयोजित स्वागत समारोह में प्रेरणा प्रदान करते हुए मुनिश्री मोहजीत कुमार जी ने कहा ओडिशा क्षेत्र के श्रावक- श्राविकागण श्रद्धा और भक्ति

से भरे हुए हैं। अब अपेक्षा है कि नई पीढ़ी में श्रद्धा के साथ आध्यात्मिकता की जड़ों को सिंचन देकर उन्हें पल्लवित पुष्पित किया जाये। इसके लिए उन्हें तात्विक ज्ञान अध्यात्म का दर्शन एवं व्यावहारिक संबोध दिया जाए।

मुनि ने आगे कहा कि संतों का श्रम, नई कल्पनाओं का प्रस्तुतिकरण श्रावकों की श्रद्धा की वर्धापना से गुरु दृष्टि की आराधना करते हुए सभी संघीय विकास में योगभूत बने रहें। अपने संयोजकीय वक्तव्य में यात्रा गणित प्रस्तुत करते हुए मुनि भव्य कुमार जी ने बताया कि आंध्रप्रदेश में प्रवेश करने के पश्चात लगभग 1250 कि.मी. से अधिक पदयात्रा

कर मुनिवरों का ओडिशा में पदार्पण हुआ है। मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि आज हमारे यात्रा पथ का महत्वपूर्ण पड़ाव है। गत दो वर्षों से दक्षिण भारत की यात्रा करते हुए आज हमने पूर्वी भारत की धरती पर कदम रखे हैं। पूज्यप्रवर की दृष्टि की आराधना करते हुए निरन्तर आगे बढ़ते रहें यह काम्य है। इससे पूर्व तेरापंथ महिला मंडल, कटक की बहिनों ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा कटक के अध्यक्ष मुकेश सेठिया, तेयुप अध्यक्ष शशि चोरडिया महिला मंडल अध्यक्ष सुनीता बैंगानी, मंत्री समता सेठिया ने भावाभिव्यक्ति दी। आभार प्रकट मनीष सेठिया ने किया।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का सफल आयोजन

दादर, मुंबई।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी निर्वाणश्री जी ठाणा- ६ के पावन सान्निध्य में तेरापंथ- मेरापंथ कार्यशाला सफल समो-योजन किया गया।

कार्यशाला में उपस्थित संभागियों को सम्बोधित करते हुए विदुषी साध्वी निर्वाणश्रीजी ने कहा - जन्मना तेरापंथी होना सौभाग्य है, पर आपकी भावी पीढ़ी भी तेरापंथ को समझे इसलिए कार्यशाला की अपेक्षा है। आचार्य भिक्षु ने निस्पृहता से सत्य-प्राप्ति की राह चुनी थी। उनके विचारों में गहराई थी व भावों में ऊंचाई थी। उन्होंने सत्य के अनेक रहस्यों को उजागर किए व सच्ची राह दिखाई। प्रबुद्ध साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभा जी ने अपने विशेष वक्तव्य में दया की मीमांसा करते हुए कहा - आचार्य भिक्षु ने अहिंसा को सर्वोपरि मूल्य दिया। उन्होंने प्राणरक्षा के स्थान पर आत्मरक्षा को

श्रेष्ठ बताया। यह कार्यशाला आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों को आत्मसात करने का विशेष उपक्रम है। कार्यशाला के प्रशिक्षक प्रवक्ता उपासक रतन सियाल ने आचार्य भिक्षु के महनीय दर्शन व उनके मूलभूत सिद्धांतों की विस्तार से व्याख्या की। उन्होंने अनेक उदाहरणों व दृष्टांतों से दान, दया आदि सिद्धांतों की व्याख्या की। साध्वी योगक्षेमप्रभा जी, साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी साध्वी मुदितप्रभा जी एवं साध्वी मुधुरप्रभा जी ने 'आचार्य भिक्षु से सम्बद्ध गीत' की मोहक प्रस्तुति दी।

कार्यशाला का शुभारंभ स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों के मंगलाचरण से हुआ। वरिष्ठ प्रवक्ता उपासक व ते. सभा के पूर्व अध्यक्ष गणपत मारु ने समागत अतिथियों का स्वागत किया। मंच संचालन तेरापंथ सभा के कर्मठ मंत्री पंकज चोपड़ा ने किया। यह जानकारी तेयूप उपाध्यक्ष पंकज कोठारी ने दी।

भक्ति से ही व्यक्ति का होता है कल्याण

चेन्नई।

युगप्रधान शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 बेंगलुरु से चेन्नई चातुर्मास के लिए पदयात्रा करते हुए श्री पार्श्व पद्मावती तीर्थ धाम कृष्णगिरी पधारे। तीर्थ धाम के प्रमुख आचार्यश्री बसंत विजयानंद गिरिजी ने मुनिवर को कुशलक्षेम पूछा एवं स्वागत करते हुए कहा देवी मां पद्मावती की कृपा

से आज आपका और हमारा मिलना हो रहा है। देवी मां का आशीर्वाद प्राप्त करके ही मैं इस मुकाम तक पहुंचा हूँ। उन्होंने पद्मावती देवी के अनेक रूपों की चर्चा करते हुए आगे कहा भक्ति से ही शक्ति जागती है भक्ति से ही व्यक्ति का कल्याण होता है। आचार्य जी ने स्वयं की 21 वर्षीय साधना का अनुभव साझा करते हुए बताया कि किस तरह आध्यात्मिक साधना से पद्मावती माता का कृपा प्रसाद मिला और इस तीर्थधाम परिसर का निर्माण

हुआ। इस अवसर पर डॉ मुनिश्री पुलकित कुमारजी ने कहा पद्मावती देवी का वर्णन जैन शास्त्रों में 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ प्रभु की अधिष्ठायिका देवी के रूप में प्राप्त होता है। मुनिवर ने उपसर्गहर स्तोत्र का उल्लेख करते हुए कहा जैन धर्म पर आए अनेक संकटों के बादलों को दूर करने में देवी सहायक भी रही है। वर्तमान समय में भी पद्मावती माता के अनेक चमत्कार रूपी प्रभाव जैन धर्म के श्रावक श्राविकाओं के जीवन में नजर आते हैं।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए। — आचार्य श्री महाश्रमण



साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर हृदयोद्गार

अनुशासन एवं वात्सल्य की संगम स्थली

● साध्वी प्रांशुप्रभा ●

महत्ता वृक्ष की नहीं होती है, उसके बीज की होती है, महत्ता दीपक की नहीं, ज्योति की होती है, भव्यता महल की नहीं उसकी बुनियाद की होती है, ठीक इसी प्रकार वह व्यक्ति सबके लिए आदरणीय, आचरणीय और सम्मानीय बन जाता है। जिनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व ने ऊँचाइयों का स्पर्श किया है। इसी श्रृंखला में एक नाम है - साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा जी। उनका जीवन बहुआयामी गुणों से संपूरित है। उनके जीवन में तपस्विता, तेजस्विता, वात्सल्य कूट-कूट कर भरी हुई है।

वे विनम्रता, सरलता, सहजता से ओत-प्रोत मुझे प्रतीत होते हैं। उनके जीवन से संदर्भित कुछ संस्मरण आपके सामने प्रस्तुत कर रही हूँ, वे निम्न हैं -

1. बात-बात में आत्मा का दर्शन : सन् 2026 की बात है, मैं सुबह एक दिन प्रथम प्रहर की गोचरी कर साध्वी प्रमुखा श्रीजी के पास जैसे ही मालूम करने जा रही थी। मैंने प्रमुखाश्रीजी के जैसे ही कमरे में झाँका तो महाराज ने फरमाया - 'केवल बाहर मत देखो, भीतर भी

देखना सीखो'। इससे उन्होंने मुझे बात-बात में ही आत्मा के दर्शन का बोध प्रदान करवा दिया।

2. अनुशासन एवं वात्सल्य से पूरित : सन् 2022 की बात है - बीदासर मर्यादा महोत्सव के बाद जैसे ही मुख्य नियोजिका सबको समय दिला रहे थे, क्योंकि उस समय शासन माता साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी स्वास्थ्य लाभ के लिए दिल्ली पधारे हुए थे। मैं साध्वी प्रांशुप्रभा प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझ रही थी। उस समय आपने समय दिलाते हुए फरमाया - 'प्रांशुप्रभाजी थारी निर्जरा करयोड़ी ऐली कोनी ज्यावे'। वह वात्सल्य मैं कभी नहीं भूल सकती।

इसी संदर्भ में एक प्रसंग और प्रस्तुत कर रही हूँ। सन् 2026 की बात है मातृ हृदया प्रमुखा श्रीजी लाडनू में मुझे मोबाइल के प्रायश्चित्त के संदर्भ में पंचखाण के लिए दिखलाया। उस समय उनका वात्सल्य इतना कि 'आरे और घणा ही काम है' यह साध्वी जयविभाजी महासत्याजी को कहा और मुझ पर वात्सल्य बरसाते हुए छोटा पन्ना ओटण के लिए दिया। यह संस्मरण

मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया। सन् 2026 की बात है साध्वी संघप्रभाजी महासत्याजी को टाइफाइड हो गया। आपकी इतनी वत्सलता कि आप बिना कहे ही सब कुछ जान लेते हैं। आप समयज्ञ हैं, आपने मुझसे (साध्वी प्रांशुप्रभा) को कहा कि थारे भी इतरो ठीक कोनी, संघप्रभा महासत्याजी के भी बुखार आ रही है, आपने बहुत बार मुझे कहा कि थारे गोचरी वास्ते एक सिंघाड़े की व्यवस्था कर लूँ।

इतना आपका माइपणा, कृपा, शुभदृष्टि कभी भी मैं भूल नहीं सकती हूँ। आपका इतना स्नेह एवं इतनी आत्मीयता कि जब भी कोई का लोच हो या आप गोचरी करवाकर पधारते तो आपका मुझे ग्रास दिलाना मेरे लिए वह जीवन में शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक संपोषण प्रदान करने वाला है। मैं आपके साध्वी प्रमुखा पंचम मनोनयन दिवस पर आपकी अभ्यर्थना करती हूँ एवं आपके लिए मंगलकामना करती हूँ कि आपका स्वास्थ्य निरामय रहे एवं हम साध्वियों को आपका दीर्घकाल तक आशीर्वाद एवं सान्निध्य मिलता रहे।

नव इतिहास रचाया है

● साध्वी रक्षितयशा ●

रूँ-रूँ में छाया उल्लास, गण में मुसकाया मधुमास प्रमुख पद महकाया है, नव इतिहास रचाया है।।

अंबर बरसे धरती हरसें, मंगल बेला आई। चयन दिवस का भव्य नजारा, दिल में खुशियाँ छाई। वंदन-वंदन लो अभिनंदन, साध्वी गण करता वर्धापन। कैसा आनंद छाया है, सबको खूब सुहाया है।।

नया राज है, नया ताज है, नित्य नया अंदाज है महाश्रमण की हीरकणी यह श्रमणी गण सरताज है चमका गण का भाग्य सितारा, बहे छलाछल अमृतधारा। अभिनव उत्सव आया है, भिक्षु गण सरसाया है।।

योगक्षेम वर्ष में मिल रही, अमृत शिक्षा रसधार। छोटी-छोटी सतियों में, भर रहे सद्संस्कार। वत्सलता की अनुपम मूरत, लगती सबको प्यारी सूरत। पल-पल तेरा ही साया है, सबका भाग्य संवारा है।।

हर धड़कन में सहज समर्पण के मधुरिम सुर साज विनम्रता की भव्य नजीर पर हमको अनहद नाज जुग-जुग जीओ साध्वीप्रमुखा, जय हो जय हो साध्वीप्रमुखा। अद्भुत रंग जमाया है, कैसा ठाठ लगाया है।।

लय: नीले घोड़े रा असवार...

वंदन अभिनन्दन करते हैं

● साध्वी कान्तप्रभा ●

साध्वी प्रमुखा का चयन दिवस हम मिलजुल आज मनाते हैं वंदन अभिनन्दन करते हैं सब गीत खुशी के गाते हैं.. जय हो

सरदारशहर की पुण्यधरा पर महाश्रमण का महाउपकार साध्वी प्रमुखा का पद देकर के साध्वी संघ का सौयाभार निश्चित बना साध्वी परिवार हम श्रद्धा शीश झुकाते हैं हे सतिशेखरे! मनोनयन पर शुभ संकल्प सजाते हैं महाप्रज्ञ की अनुपम कृति को पाकर भाग्य सराते हैं सक्षम नेतृत्व मिला हमको (सब मिलकर) आज बढ़ाते हैं वक्तृत्वकला अनुपम तेरी अनुपम है जीवन की शैली गुरुभक्ति है अनुपम तेरी अनुपम है संपादन शैली विनय, समर्पण कार्यकुशलता देख हृदय विकसाते हैं

रहे निरामय बनो चिरायु करे शुभ कामना शुभ भविष्य हो साध्वीगण का करे सारणा वारणा गुरुओं की पा शुभाशीष्ये नयन कमल हरषाते हैं

तर्ज - है प्रीत जहाँ की रीत सदा

कण-कण है मुस्काया

● साध्वी मधुस्मिता ●

प्रज्ञा निलय में खुशियों का सागर लहराया। नई बहारें कुदरत का कण-कण है मुस्काया

उज्ज्वलतम आचार तुम्हारा प्रेरक बनता है क्षण-क्षण सौम्यमूर्ति व्यवहार समुन्नत बात-बात में अपनापन युग अनुरूप प्रशिक्षण प्रवचन सबके मन भाया ॥ १ ॥

स्वाध्यायी बहुश्रुत समयज्ञा सतीशेखर लो वन्दन आज्ञा मर्यादा गुरुनिष्ठा तप जप से भावित चेतन उच्च साधना के प्रयोग है कल्पवृक्ष छाया ॥ २ ॥

अभिनन्दन की पावन बेला आस्था थाल सजा लाएँ रहो निरामय बनो शतायु चयन दिवस पर हम गाएँ चन्देशी, मोदी परिकर यश परचम फहराया ॥ ३ ॥

तर्ज - अणुव्रत है सोया

अद्भुत मैनेजमेंट की कला

● साध्वी कान्तप्रभा ●

'समयं गोयम मा पमायए' की जागती तस्वीर सन् 1983 फाल्गुन शुक्ला पंचमी 19 मार्च के मैंने पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश किया। उस समय उपासिका बहनें (आज की भाषा में बोधार्थी) समणी जी के निर्देशन में अतिथि भवन में रहा करती थीं (जो वर्तमान में शुभम के रूप में पहचाना जाता है)। उस समय समणश्रेणी को शुरू हुए लगभग 2-3 वर्ष ही हुए थे। हम 10 बहनें साथ में भती हुई थीं। मेरा नाम कान्ता था। आप हमें समय-समय पर यही प्रेरणा देतीं कि समय कीमती है इसका जितना सही उपयोग करोगी तो तुम्हारा जीवन बन जाएगा। हमारा आवास अतिथि भवन में था किन्तु खाना खाने के लिए पुरानी संस्था सातवीं पट्टी में थी वहाँ दिन में तीन बार जाते थे। आप फरमाते खाने में 5 मिनट देरी है तो अपना चितारना (मैं) कर लिया करो। आपस में बातें करके समय नहीं गंवाना। यह तुम्हारे विकास का स्वर्णिम काल है इस प्रकार बात-बात में प्रेरणा देते और संस्कारों को सिंचन देती यह आपकी अप्रमत्त चेतना का प्रतीक है। समणश्रेणी की प्रथम विदेश यात्रा - गुरुदेव तुलसी ने समणश्रेणी का प्रारम्भ कई नए उद्देश्यों के साथ किया उसमें एक उद्देश्य यह भी था कि विदेशों में जैन धर्म पहुंचे। उसकी क्रियान्विति के लिए समणी स्मितप्रज्ञा (साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा) व समणी मधुरप्रज्ञा को पहली बार विदेश की धरती पर

जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुदेव तुलसी के सपनों को साकार करने के लिए समणीद्वय ने जब लाडनू विश्व भारती से विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान किया उस समय का माहौल प्रसन्नमय व उत्साहयमय था। उस आह्लादमय माहौल को देखने का सौभाग्य मुझे मिला। उस समय साध्वी कनकश्री शिक्षाकेन्द्र में विराज रही थीं। अतिथि भवन में साध्वीवृंद, समणीवृंद व हम 10 उपासिकाएं साधना कर रही थीं। साध्वीश्री ने हमें एक गीत बनाकर दिया जिसमें विदेश यात्रा की मंगलकामना थी। हमने गीत याद किया। जब समणी जी ने यात्रा के लिए प्रस्थान किया हम उपासिका बहनें अतिथि भवन से रेलवे स्टेशन तक पहुँचाने गए। गीत गाते हुए रेलवे स्टेशन तक हम साथ गए क्योंकि आप गुरुदेव तुलसी के सपनों को साकार करने के लिए विदेश यात्रा कर रहे थे। उस समय अद्भुत उल्लास मय वातावरण था। उस उत्साह मय वातावरण को देखने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। हम छोटी-छोटी नन्ही-नन्ही कलियों के संगान के साथ आपकी प्रथम विदेश यात्रा सफल बनी इसका हमें गौरव है। विश्वास साकार हुआ। सन् 1989 का योगक्षेम वर्ष का पावन प्रसंग। उस समय मैं (साध्वी कान्तप्रभा) पा. शि. स. में मुमुक्षु रूप में थी। बहुत सारे साधु-साध्वी गुरु सन्निधि का लाभ उठा रहे थे। चातुर्मासिक के क्षेत्र प्रायः खाली थे। संस्था की प्रायः बहनों को पर्युषण की यात्रा

में भेजा गया (समणी स्मितप्रज्ञा जी - वर्तमान साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा जी) जो उस समय संस्था की निदेशिका थे - ने मुझसे कहा - तुमको यात्रा में ग्रुप लीडर बना कर भेज रहे हैं। यह बात सुनकर मेरी तो धड़कन तेज हो गई। हाथ पांव ढीले पड़ गए। मैंने कहा - समणी जी, मुझे ग्रुप लीडर नहीं, किसी के साथ भेज दो। मुझे कुछ नहीं आता। मैं वहाँ जाकर क्या करूँगी। समणी जी ने कहा - तुमको गाना आता है। जिसको गाना आता है वह व्याख्यान भी गाकर उसकी व्याख्या आसानी से कर सकता है। डर किस बात का। मैंने बहुत आनाकानी की। जो काम जिससे करवाना होता है उसे समझाकर करने के लिए तैयार कर देती है ऐसा मुझे अनुभव हुआ। मैं मानती हूँ कि मेरे विकास में आपका महत्वपूर्ण हाथ रहा है। मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और उस योगक्षेम वर्ष में मैंने स्वतंत्र रूप से दौड़ाइचा में पर्युषण पर्व की यात्रा की। यात्रा सम्पन्न कर जब मैं गुरुचरणों में पहुंची, तब रामणी स्मितप्रज्ञा जी ने मुझसे पूछा- कैसी रही तुम्हारी यात्रा? मैंने कहा- आपकी कृपा से यात्रा अच्छी हो गई। आपका मेरे प्रति किए गए विश्वास ने मेरे भय को दूर कर मेरे आत्मविश्वास को बढ़ाया और मेरी विकास यात्रा की शुभ शुरुआत आपकी प्रेरणा से ही प्रारम्भ हुई ऐसा मेरा मानना है। आपकी परख ने मेरी क्षमता को उजागर करने का अवसर दिया यह आपकी अद्भुत कला है।

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

सुनहरे क्षणों की अभिवंदना – आचार्य श्री महाश्रमण

● शासनश्री साध्वी मंजू रेखा ●

जैन शासन को गौरवान्वित करने वाला, अखंड, अनुशासित, समर्पित, मर्यादित तेरापंथ धर्मसंघ, आचार्य परम्परा से सुशोभित है। संघ को एक से बढ़कर एक आचार्य प्राप्त हुए। आचार्य तुलसी की पैनी दृष्टि ने मुनि मुदित को तराशना शुरू किया। वे उनकी हर कसौटी पर खरे उतरे और स्व नियंत्रण के साथ, आत्म संपदा, अध्यात्म संपदा, चारित्र संपदा में अपने आपको समर्पित कर दिया। उनकी विनम्र वैराग्य शैली आकर्षण का केन्द्र बन गई। ये सारी उपमाएं आचार्य महाश्रमण के व्यक्तित्व से जानी जा सकती हैं।

आचार्य महाश्रमण उच्च कोटि के साधक हैं। कीर्तिमान गढ़ने के लिए उनके चरण गतिमान हैं। उनकी प्रवचन शैली आगम के रत्नों से अनुप्राणित होती है। उनकी स्थित

प्रज्ञा मन की एकाग्रता को दर्शाती है। उनका दृष्टि संयम तथा वाणी संयम बेजोड़ है। इस उज्ज्वल आभामण्डल से क्षमा, मैत्री, करुणा जैसे गुण उनके हर व्यवहार में परिलक्षित हो रहे हैं। उनकी अटूट श्रम निष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा, मर्यादा निष्ठा, आचार निष्ठा तथा दायित्व निष्ठा देखकर लाडलू में आचार्य तुलसी ने उन्हें महाश्रमण पद पर नियुक्त किया। 14 सितंबर 1997 में गंगाशहर में युवाचार्य पद पर नियुक्त किया, तब आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि महाश्रमण का जीवन पुरुषार्थ व निश्चल व्यक्तित्व का जीवंत दर्शन है और श्रमशीलता की बेजोड़ मिसाल है।

आचार्य महाश्रमण पुण्य उदय के धारक हैं, जिन्हें दो-दो युगप्रधान आचार्यों की अनुभव संपदा प्राप्त है। उनका प्रबंधन और नेतृत्व

अद्भुत है। जिनकी शीतल छाया में धर्मसंघ गति-प्रगति के शिखर पर आरोहण कर रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण है हर परिस्थिति में संतुलन बनाए रखना। उनकी सोच है कि सच्चा साधु दूसरों की कमियों में नहीं अपनी आत्मा के परिष्कार में आनन्द खोजता है। अहिंसा यात्रा के दौरान जब उन्होंने सम्पूर्ण भारत परिभ्रमण कर मानवीय संस्कार प्रतिष्ठित करने हेतु जन चेतना में शक्ति का सम्प्रेषण किया तथा ध्यान योग की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। युगप्रधान आचार्य महाश्रमण का संयम की प्रेरणा के साथ उठा हुआ हर कदम वर्तमान अपेक्षाओं में प्रासंगिक है तथा युग परिवर्तन में सहायक है। आचार्य महाश्रमण का पट्टोत्सव तथा दीक्षा दिवस आनन्दमय हो, मंगलमय हो।

योग क्षेम वर्ष यह सुखकर, लाया खुशियों का त्यौहार

● साध्वी शीतल यश ●

योग क्षेम वर्ष यह सुखकर, लाया खुशियों का त्यौहार मां नेमां की दिव्य कुक्षी से, आया जग में राजकुमार ॥

वैशाखी यह महिना अनुपम, शुक्ला नवमी धन्य हुई झूमरजी के घर आंगन में, रत्नों की बरसात हुई सबसे छोटा बालक मोहन, संयम पथ की डगर बड़े पक्का निर्णय कर जीवन का, मुनि सुमेर से नित्य पढ़े गुरु आज्ञा से उदित-मुदित को, दीक्षित कर लाये गुरुद्वार ॥१॥

प्रथम दर्श में गुरु तुलसी ने, देखा भावी का सपना होनहार मितभाषी अरु, शुभयोगी होगा जग अपना विनय, समर्पण, सहिष्णुता से, गुरु के दिल को जीत लिया तुलसी महाप्रज्ञ की कृति ने, मानो सुर संगीत दिया भिक्षु के एकादश पट्टधर, महाश्रमण है खेवनहार ॥२॥

नत मस्तक है श्वेत पंक्तियां, विभुवर ऐसा रंग खिला महाविदेह सी रचना पाने, गुरु सन्निधि का योग मिला तेरे उपकारों से गुरुवर, गुलशन यह महकायेंगे तेरापंथ की यश गाथाएं, युगों-युगों तक गायेंगे शिक्षामृत का पान कराकर, करते सबका बेड़ापार ॥३॥

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी के चयन दिवस पर हृदयोद्गार

देते आज बधाई

● मुनि कमल कुमार ●

देते आज बधाई।

गुरु महाश्रमण की पूर्ण कृति साध्वीवर्या कहलाई। लघुवय में साध्वीवर्या ने अनुपम ख्यात बनाई ॥ ध्रुव ॥
सोहनलालजी अनुदेवी घर जन्म अमोलक पाया माता के उपवास सुता का तप में जन्म सुहाया तपी तपाई भू पर आई सबको बड़ी सुहाई ॥ १ ॥
विश्रुत मुनि की सहोदरी की महिमा जग में छाई मलय श्री जी की कनिष्ठा वरिष्ठ पद पर आई उदित ख्यात दोनों सन्निधि की नातीली कहलाई ॥ २ ॥
महाप्रज्ञ गुरु की सन्निधि में समणी दीक्षा भाई महाश्रमण ने गुरु आज्ञा से शुभ दीक्षा पचखाई साध्वी दीक्षा महाश्रमण मुख कली कली विकसाई ॥ ३ ॥
दीक्षा के पश्चात आपको गुरुकुल वास मिला है शासन माता का संरक्षण जीवन बाग खिला है मुख्य नियोजिका जी की पल पल बनी रही परछाई ॥ ४ ॥
असम तेजपुर में गुरुवर ने अलंकरण बक्शाया नुगरा में पदस्थ बनाकर गौरव खूब बढ़ाया संबुद्धयशा अब साध्वीवर्या सुन कण कण हर्षाया प्रमुखा प्रथम अपर नियोजिका तृतीय आप कहलाई ॥ ५ ॥
ज्ञान ध्यान स्वाध्याय आपका चलता रहे निरंतर बने प्रेरणादायी जीवन सब हित बाह्याभ्यन्तर बने चिरायु हों दीर्घायु प्रकटी है पुण्याई सदा स्वस्थ मस्त रहें नित प्रकटी है पुण्याई ॥ ६ ॥
महाश्रमण की सूझ बूझ को सविनय शीश नमाते चयन दिवस पर मिलजुल मुनिगण मंगल भाव सुनाते गुरु दृष्टि अमृत की वृष्टि फर्क न राई पाई ॥ ७ ॥

तर्ज : संयममय जीवन हो

शासन उपवन रा मंदार थांस्युं नन्दन वन गुलजार

● साध्वी मधुस्मिता ●

शासन उपवन रा मंदार म्हाने वांछित फल दातार शासन उपवन रा मंदार थांस्युं नन्दन वन गुलजार गौरव शिखरं चढावां म्है मंगल शंख बजावां म्हे ॥ १ ॥

थारै दिल दरियै में इमरत लहरौवे दिन रात प्राणी मात्र पर अनुकम्पा री करो सतत बरसात देव कुंवर सो मुख मनहार नयन कमल है सदाबहार ॥ २ ॥

हिमगिरी सी उत्तुंग साधना अद्भुत समता भाव तीर्थेश्वर सम कल्याणी वाणी रो गजब प्रभाव पीकर शान्त सुधारस धार सारी दुनियां शुक्रगुजार ॥ ३ ॥

महातपस्वी पुरुषप्रतापी भास्कर सा द्युतिमान यायावर बण तीन देश नै दिया तीन अवदान तम में पसरयो प्रखर प्रकाश आयो पतझर में मधुमास ॥ ४ ॥

योगक्षेम वर्ष शुभ अवसर सभासुधर्मा खास संघ सदन री च्यारू कुंटा फैल्यो हर्षोल्लास धरती अम्बर गुंजै आज युग-युग जीओ गण सरताज ॥ ५ ॥

तर्ज - नीला घोडा रा...

हे! महासूर्य हे! महाज्योति तुम महातपस्वी कहलाएं

● साध्वी सुव्रतयशा ●

हे! महासूर्य हे! महाज्योति तुम महातपस्वी कहलाएं तपः साधना अद्भुत तेरी, तीर्थंकर सम गुरुवर पाएं पांव पांव चलकर के तुमने दिया विश्व को अमृत संदेश श्रम की ज्योति जले निरन्तर, गण में छाया नव उन्मेष जन जन के तुम भाग्य विधाता, मंगल स्वास्तिक आज रचाएं करुणा के तुम महासमन्दर, प्रतिपल बहती करुणा की धारा कुशल शासना अनुपम तेरी, मिला संघ को दिव्य सितारा पंचाचार साधना से गण बगियां को महकाएं

गूंज रही है आज धरा पर, अणुव्रत यात्रा की आवाज ऐसे महाश्रमण को पाकर पुलकित है यह सकल समाज आरोग्य बोधि की करें कामना, गण धूली को शीष चढ़ाएं

भिक्षु धम्म जागरणा व महाश्रमणोत्सु मंगलम 3.0 का आयोजन

पूर्वाचल-कोलकाता।

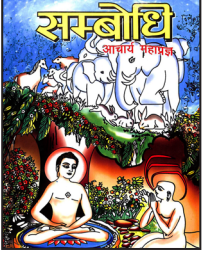
तेरापंथ धर्म संघ के आद्य प्रवर्तक महामना आचार्य भिक्षु की स्तुति में तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वाचल-कोलकाता अपनी

भजन मंडली पूर्वाचल स्वर लहरी के साथ प्रत्येक माह की सुदी तेरस को भिक्षु धम्म जागरणा का आयोजन करती है।

इस वर्ष गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के 53वे दीक्षा दिवस (युवा दिवस)के

उपलक्ष्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वधान में महाश्रमणोत्सु मंगलम 3.0 कार्यक्रम का भी साथ ही में आयोजन किया। कार्यक्रम का सफल संचालन धीरज मालू ने किया।

संबोधि

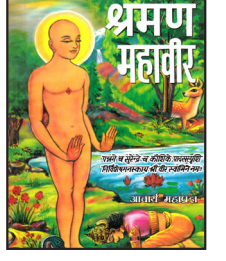


परिशिष्ट



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर

समता के तीन
आयाम

(७) आज्ञाचक्र में वर्तुलाकार ज्योति का ध्यान करने से साधक मोक्ष पद पाता है।

(८) ब्रह्मरन्ध्र में अष्टम चक्र स्थित सूई की नोक जैसा धूम्राकार जालन्धर नामक स्थान पर ध्यान द्वारा चित्तलय करने से निर्वाण पद मिलता है।

(९) सोम-चक्र में पूर्ण सच्चिद्रूपा अर्द्धशक्ति का ध्यान करने से मनोलय होता है। एवं मोक्षपद लाभ होता है।

(१०) परम-आनंद के साथ अपने हृदय के बीच में इष्ट देवता की मूर्ति का ध्यान करने से साधक आत्मलीन हो जाता है।

(११) एकान्त में शववत् (मुर्दे जैसा) चित्त लेट कर एकाग्रचित्त से अपने दाहिने पैर के अंगूठे पर दृष्टि स्थिर करके ध्यान करने से शीघ्र ही चित्तलय होता है। यह चित्तलय करने का प्रधान और सहज उपाय है।

(१२) जीभ को तालुमूल में लगा ऊपर उठाये रखें। इससे चित्त एकाग्र होकर परम पद में लीन हो जाता है।

(१३) नाक के ऊपर दृष्टि रखकर बारह अंगुल पीली या आठ अंगुल लाल वर्ण की ज्योति का ध्यान करने से चित्तलय हो जाता है एवं वायु स्थिर हो जाती है।

(१४) ललाट के ऊपर शरद् के चन्द्र जैसी श्वेत वर्ण-ज्योति का ध्यान करने से मनोलय हो जाता है एवं आयु बढ़ती है।

(१५) देह के बीच में निर्वात निष्कम्प दीपकलिका जैसा अष्ट अंगुल ज्योति का ध्यान करने से जीव मुक्त हो जाता है।

(१६) दोनों भौहों के बीच सूर्य जैसे तेजपुञ्ज का ध्यान करने से ईश्वर का सदृशन मिलता है।

श्वास-जिसने आनापान (श्वास) स्मृति का सम्यक् अभ्यास कर लिया है वह व्यक्ति बादलों से मुक्त आकाश में चन्द्रमा की भांति लोक को प्रकाशित करता है। आनापान स्मृति ध्यान का महत्त्व इससे स्पष्ट होता है। श्वास शरीर का वह भाग है जो निरन्तर स्वेच्छापूर्वक गतिशील रहता है। श्वास के सम्बन्ध में विविध विधियां प्रयुक्त हुई हैं। उन सभी का ध्येय है-अपने चैतन्य में प्रवेश कराना।

स्वरोदय विज्ञान सारा श्वास पर खड़ा है, जिसे शिवजी कहते हैं-'ज्ञानानां मस्तके मणिः' - समस्त ज्ञानों के मस्तिष्क पर यह मणि-सदृश है। 'यह स्वरोदय शास्त्र समग्र शास्त्रों में श्रेष्ठ है। यह आत्मारूपी घड़े को प्रकाशित करने के लिए दीप शिखा की तरह है।' साधारण कार्यों के लिए इसका प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। यह तो आत्मा के द्वारा आत्मा के लिए आत्मा में स्वयं ज्ञेय है, जिसमें साधक श्वास-दर्शन में पूर्णतया जागृत रहता है। श्वास से सुख-दुःख, हानि-लाभ, स्वास्थ्य अस्वास्थ्य, मृत्यु आदि सभी सूचनाएं प्राप्त होती रहती हैं।

श्वास की साधना में प्रस्तुत साधक श्वास के प्रति जागृत रहता है। वह कहां से आता है, कैसे आता है, देखता है। श्वास के साथ कोई श्रम नहीं करता, सिर्फ देखता है और अपने मन को उसके आवागमन के साथ नियोजित कर देता है, शांति और अशांति के साथ उन दोनों के परिणामों को देखता है, केवल तटस्थ भाव से बिना प्रतिक्रिया किये। उसके सहज जो परिणाम आते हैं, उनकी अनुभूति से वह अपरिचित नहीं रहता। श्वास-दर्शन और उस पर एकाग्रता का पहला स्पष्ट प्रभाव तो यह होता है कि उसमें राग-द्वेष, काम-क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, लोभ आदि से उत्पन्न उद्वेग तनावों का अभाव हो जाएगा। ये सब श्वास की उत्तेजना अशांति में होते हैं। शांत श्वास में इनका अस्तित्व असंभव है। श्वास और वृत्तियों का घनिष्ठतम संबंध है। वृत्तियां चंचलता की द्योतक हैं। जैसे कि वृत्ति उत्पन्न होगी श्वास में परिवर्तन आ जायेगा। वृत्तियों का ज्वार नहीं है भीतर, तो श्वास में भी वैषम्य नहीं है। श्वास को शान्त रखेंगे तो वृत्तियां शांत रहेंगी और वृत्तियों को शांत रखेंगे तो श्वास शांत रहेगा। दोनों का अविनाभावी संबंध है। (क्रमशः)

अब बंधुमती अरक्षित थी। मालाकार का शरीर बंधा हुआ था, किन्तु उसकी आखें मुक्त थीं और उससे भी अधिक मुक्त था उसका मन। गोष्ठकों द्वारा बंधुमती के साथ किया गया अतिक्रमण वह सहन नहीं कर सका। वह भावुकता के चरम बिन्दु पर पहुंचकर बोला-

'मुद्गरपाणि! मैं तुम्हारी इस काष्ठ प्रतिमा से प्रवंचित हुआ हूँ। मैंने व्यर्थ ही शत-शत कार्षापणों के पुष्प इसके सामने चढ़ाए हैं। यदि तुम यहां होते तो क्या तुम्हारे सामने यह दुर्घटना घटित होती? वह भावना के आवेश में इतना बहा कि अपनी स्मृति खो बैठा। अकस्मात् एक तेज आवाज हुई। मालाकार के बंधन टूट गए। उसका आकार विकराल हो गया। उसने मुद्गर उठाया और सातों को मौत के घाट उतार दिया। उसका आवेश अब भी शांत नहीं हुआ।

अर्जुन की पुष्पवाटिका राजगृह के राजपथ के सन्निकट थी। उधर लोगों का आवागमन चलता था। पर यक्षायतन में घटित घटना का किसी को पता नहीं चला। मालाकार ने दूसरे दिन फिर सात पथिकों (छह पुरुष और एक स्त्री) की हत्या कर डाली। इस घटना से नगर में आतंक फैल गया। नगर के आरक्षिकों ने अनेक प्रयत्न किए पर उस पर नियंत्रण नहीं पा सके।

सात मनुष्यों की हत्या करना अर्जुन का दैनिक कार्यक्रम बन गया। महाराज श्रेणिक के आदेश से राजगृह में यह घोषणा हो गई- 'मुद्गरपाणि-यक्षायतन की दिशा में कोई व्यक्ति न जाए।' इस घोषणा के साथ राजपथ अवरुद्ध हो गया। फिर भी कुछ भूले-भटके लोग उधर चले जाते और मालाकार के शिकार बन जाते। सात मनुष्यों की हत्या का यह सिलसिला लम्बे समय तक चलता रहा। छह गोष्ठिकों के पाप का प्रायश्चित्त न जाने कितने निरपराध लोगों को करना पड़ा।

जिस राजगृह को भगवान अभय का पाठ पढ़ा रहे थे, जहां भगवान की अहिंसा सुरसरिता की भांति सतत प्रवाहित हो रही थी, जिसका कण-कण श्रद्धा और संयम की सुधा से अभिषिक्त हो रहा था, वह नगर आज भय से संत्रस्त, हिंसा से आतंकित और संदेह से उत्पीड़ित हो रहा था। यह महावीर के लिए चुनौती थी। यह चुनौती थी उनकी अहिंसा को, उनकी संकल्प-शक्ति को और उनके धर्म की समग्र धारणा को। भगवान ने इस चुनौती को झेला। वे राजगृह पहुंचे और गुणशीलक चैत्य में ठहर गए। राजगृह के नागरिकों को भगवान के आगमन का पता लग गया। पर कौन जाए? कैसे जाए? भगवान महावीर और राजगृह के बीच में दिख रहा था सबको अर्जुन और उसका प्राणघाती मुद्गर। जनता के मन में उत्साह जागा पर समुद्र के ज्वार की भांति पुनः समाहित हो गया।

सुदर्शन का उत्साह शान्त नहीं हुआ। उसने भगवान की सन्निधि में जाने का निश्चय कर लिया। उसकी विदेह-साधना बहुत प्रबल थी। वह मौत के भय से अतीत हो चुका था। उसने अपने माता-पिता से कहा-

'अम्ब-तात ! भगवान महावीर गुणशीलक चैत्य में पधार गए हैं।'

'वत्स ! हमने भी सुना है जो तुम कह रहे हो।'

'अब हमारा क्या धर्म है?'

'हमारा धर्म है भगवान की सन्निधि में उपस्थित होना। किन्तु...।'

'अंब-तात ! भय के साम्राज्य में किन्तु का अन्त कभी नहीं होगा।'

'क्या जीवन का कोई मूल्य नहीं है?'

'धर्म का मूल्य उससे बहुत अधिक है। अल्पमूल्य का बलिदान कर यदि मैं बहुमूल्य को बचा सकूँ तो मुझे प्रसन्नता ही होगी?'

'वत्स ! अभी मगध सम्राट् श्रेणिक भी भगवान की सन्निधि में नहीं पहुंचे हैं, तब हमें क्यों इतनी चिन्ता मोल लेनी चाहिए?'

'यह चिन्ता का प्रश्न नहीं है, यह धर्म का प्रश्न है। यह सत्ता का प्रश्न नहीं है, यह श्रद्धा का प्रश्न है। क्या श्रद्धा के क्षेत्र में मेरा स्थान सम्राट् से अग्रिम पंक्ति में नहीं हो सकता?'

'क्यों नहीं हो सकता?'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण

कार्यकर्ता के
मौलिक गुण



कार्यकर्ता एक समस्त पद है। पद विभाजन करने से दो शब्द हो जाते हैं – कार्य और कर्ता-यानी काम करने वाला। शाब्दिक अर्थ है-काम करने वाला। कौन व्यक्ति ऐसा होगा जो कुछ भी काम नहीं करता। आदमी खाता है, पीता है, सोता है, अपने परिवार के लिए कमाई करता है, पढ़ता है, लिखता है, यह सब काम है और काम करने वाला कार्यकर्ता है। इस शाब्दिक अर्थ से तो ऐसा कोई व्यक्ति मिलना कठिन होगा, जो कार्यकर्ता न हो। किन्तु कार्यकर्ता शब्द के अर्थ में हमें कुछ और जोड़ देना चाहिए।

वह व्यक्ति कार्यकर्ता होता है जो औरों के लिए काम करता है। कार्यकर्ता की पहली विशेषता या पहला मौलिक गुण होता है कि उसमें परार्थ को भावना होती है। कई बार श्रद्धेय आचार्यप्रवर अपने प्रवचन में तीन शब्दों का प्रयोग करते हैं—स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ। काम करने के तीन उद्देश्य होते हैं-अपने लिए, दूसरों के लिए या फिर परम-मोक्ष के लिए।

एक कार्यकर्ता में परमार्थ के लिए काम करने की भावना हो या न हो, पर कम से कम परार्थ भावना अवश्य हो, दूसरों के लिए कुछ करने वाला हो। यह विशेषता उसमें अवश्य होनी चाहिए। इसे भले परार्थ भावना कह दें या फिर दूसरे शब्दों में कहना चाहें तो सेवा-भावना कह दें। पर-कल्याण महान सेवा है।

सेवा-भावना के बिना कार्यकर्ता की कर्तृत्व-शक्ति का आधार ही नहीं होता है। कार्यकर्तृत्व का आधार है सेवाभावना और सेवाभावना संवेदनशीलता के साथ जुड़ी हुई है। यदि संवेदनशीलता नहीं है, दूसरों के सुख-दुःख को या कठिनाइयों को अनुभव करने की जिसमें चेतना विकसित नहीं है, वह परार्थ कुछ नहीं कर सकता और जो दूसरों की कठिनाइयों का संवेदन करता है, उसे समझता है, पहचानता है, जानता है, कुछ करने की भावना जागती है तो वह सच्चे अर्थों में कार्यकर्ता कहलाता है।

जो व्यक्ति जीवन में विशिष्ट कार्य करता है तो बीच में कठिनाइयां भी हो सकती है पर कार्यकर्ता में यह विशेषता होनी चाहिए कि वह कठिनाइयों से घबराए नहीं, उन्हें साहस के साथ झेले।

कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएँ, वह उन्हें पार करने का प्रयास करें।

डर की क्या बात, पथिक काली रातों में,
पथ में उजियाला होगा, लो दीपक हाथों में।
दुनिया के दीपक धोखा दे सकते हैं,
पर साहस का दीपक जलता झंझावातों में।।

कार्यकर्ता का दूसरा मौलिक गुण होना चाहिए-साहस। वह कठिनाइयां आने पर भी अपना कार्य बन्द न करे, उनका आत्मविश्वास के साथ सामना करे। बहुत-सी कठिनाइयां तो अपने आप में शक्तिहीन होती हैं। व्यक्ति यदि घबराए नहीं, कुछ आगे बढ़कर उनका मुकाबला करे तो कई बार ऐसा लगता है कि कठिनाई कुछ थी ही नहीं, हमने कल्पना से कठिनाई मान ली। वह दिखने वाली कठिनाई अपने आप समाप्त हो जाती है।

कार्यकर्ता में साहस होना चाहिए क्योंकि अनेक बार झूठा भय हमारे सामने होता है और हम घबरा जाते हैं। जल्दबाजी में अकरणीय कर बैठते हैं या अनहोना हो जाता है।

जो व्यक्ति काम करता है, उसकी आलोचना भी हो सकती है। भले वह व्यक्ति अपने ढंग से अच्छा काम भी क्यों न करता हो। समाज में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनका दृष्टिकोण निषेधात्मक होता है और वे अच्छे काम करने वाले व्यक्ति को भी कुछ-न-कुछ आलोचना करते रहते हैं। उनमें दोषों को ढूँढ़ते रहते हैं। ईर्ष्या रखने वाले लोग काम करने वालों की छवि को खराब करने का हर संभव प्रयास कर सकते हैं, ऐसे परिवेश में कार्यकर्ता के लिए अपने दिमाग को अप्रभावित रखना जरूरी होता है।

आलोचक आलोचना करते रहेंगे और काम करने वाले काम करते रहेंगे, यह संतुलित सोच होना जरूरी है। आलोचना के विषय में तटस्थ चिन्तन करें। उपयोगी लगे, जो सच्ची लगे, उसको मूल्य दें, शेष सबको छोड़ दें, यह विवेक-चेतना अवश्य जागे। एक अच्छा कार्यकर्ता अनावश्यक निन्दा सुनकर कभी अपना संतुलन नहीं खोता और न अपने दिमाग को बोझिल तनावग्रस्त करता है। कार्यकर्ता में इतना विकास होना चाहिए कि आलोचना करने वालों के प्रति भी विरोध का भाव न रखे, मन में मैत्री का भाव जगाए। इस संदर्भ में मेरा ऐसा मत है कि जब दूसरे लोग झूठी आलोचना करते हैं, उस समय व्यक्ति यदि तटस्थ रहता है, संतुलित रहता है तो आज के आलोचक कल उसके प्रशंसक बन सकते हैं।

व्यक्ति का यदि रास्ता सही है, काम सही है तो आलोचना करने वाले भी समय आने पर समर्थक और अनुकूल बन सकते हैं। कार्यकर्ता का तीसरा मौलिक गुण होना चाहिए-सहिष्णुता। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु

abtypitt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मई 2026

सप्ताह के विशेष दिन

28 मई

भगवान
सुपार्श्वनाथ जन्म
कल्याणक

29 मई

भगवान
सुपार्श्वनाथ दीक्षा
कल्याणक

31 मई

पक्खी

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

घाटकोपर

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी एवं साध्वी मंजुरेखाजी ठाणा ५ के सानिध्य में उत्साह के साथ दीक्षा दिवस मनाया गया। भक्ति प्रणत अभिवंदना के स्वरो में शासन श्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा- राजस्थान की पुण्य धरा सरदारशहर में जन्मे एवं सरदारशहर में मुनि श्री सुमेरमलजी स्वामी (मंत्री मुनि) के कर कमलों से मात्र 12 वर्ष की लघु वय में दीक्षित आज तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता है। आज उनका ५३वां दीक्षा दिवस है। पूरा धर्म संघ अति उत्साह के साथ आनन्दित हैं। आगम वाणी बता रही है कि जिस मुनि में अनुशासन व विनय हो वह उन्नत शिखर पर आरोहण कर रहा है। जिसका प्रत्यक्ष साक्षात् हो रहा है, महाश्रमण जी के जीवन में। शासन श्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा तेरापंथ के आचार्यों का कितना महान चिन्तन व आशीर्वाद है कि आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ ने मुनि मुदित को महाश्रमण पद पर विभूषित किया फिर युवाचार्य बनाया। ऐसा तब होता है जब उनकी गुणवत्ता सामने जाती है। उनकी श्रम निष्ठा तथा संघ निष्ठा, आचार निष्ठा उनके अपने व्यक्ति और कर्तृत्व की पहचान है। उन्होंने सम्पूर्ण भारत की यात्रा कर हजारों व्यक्तियों को नशामुक्त बनाया, तथा जीवन जीने की कला सिखाई। साध्वी उदित प्रभाजी, निर्भयप्रभाजी, चेलनाश्रीजी ने अभिवंदना की। साध्वी मंजु रेखाजी, उदित प्रभाजी, निर्भय प्रभाजी एवं चेलनाश्रीजीने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। सूरजमल दुगड़ ने प्रेरक एवं मधुर संस्मरण सुनाएँ। महेन्द्र तातेड ने आभार ज्ञापन किया।

हासन

परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशा जी के सानिध्य हासन में आचार्य प्रवर का 53वाँ दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वी श्री ने मंगल उद्बोधन में कहा आचार्य श्री महाश्रमणजी मानवता के मसीहा, करुणा के कुबेर स्थित है। आप श्री का जीवन में आचार-विचार की ऊँचाई है वही साधना की गहराई है। अनेक गुणों के द्वारा मण्डित नेतृत्व व्यक्तित्व है। स्वयं कल्याण के साथ साथ आपका जीवन मानव कल्याण के लिए समर्पित है। आपकी

कार्य समिति आदि समितियों के प्रति जागरूकता बेजोड़ है। लम्बी यात्राओं के द्वारा नव इतिहास का सृजन किया। दीक्षा के क्षेत्र में नव कीर्तिमान स्थापित किए। करुणामय जीवन में आवेश, आवेग का उपशात बनाया है। हम आज मंगल क्षणों में यही मंगल कामना करते हैं आप योग-युगों तक शासन साधना करें। साध्वी प्रमुख श्री विश्रुत विभाजी के चयन दिवस की मंगल कामना करते हुए आप चिरायु से, निरामय हो, शतायु हो। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी वर्षमान यशा जी ने गीत के माध्यम से किया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष नितेश सुराणा ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। चतुर्दशी में हाजरी का वाचन किया गया कार्यक्रम का संचालन साध्वी बोधिप्रभा जी ने किया।

हैदराबाद

हिमायतनगर के 'प्रशंसा' गेस्ट हाउस में 'युगप्रधान' आचार्य श्री महाश्रमण जी के '53 वे दीक्षा दिवस' का आयोजन मुनि दीप कुमार जी आदि ठाणा-२ के सानिध्य में तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद द्वारा किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा आचार्य महाश्रमण संयम साधना के शिखर पुरुष है। उनका सच्चा मनोबल है, दृढ़ संकल्प बल और वैराग्य रस की पवन धारा प्रवाहित होती है। आचार्य श्री संयम साधना प्रारंभ से ही कठोर रही। उनमें सिह्णता का महान गुण है। वे साधना को मुख्यता देते हैं। साधना करते करते सैकड़ों लाखों लोगों के साधना के मार्गदर्शक बन गए। मुनि श्री ने आगे कहा आज आचार्य श्री के दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में बना रहे हैं, आचार्य श्री अपने जीवन के सातवें दशक में हैं फिर भी युवाओं जैसी स्फूर्ति एवं उत्साह है। भारी पुरुषार्थ करते हैं।

युवाओं को विशेष प्रेरणा लेकर धर्म संघ की सेवा करनी चाहिए। मुनि काव्य कुमार जी ने कहा सरलता और महानता का अनूपमेय चित्र व्यक्तित्व है, आचार्य श्री महाश्रमण जी। प्रतिभा और पुरुषार्थ का महासंगम आचार्य श्री महाश्रमण जी। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद के मंत्री नीरज सुराणा ने अपने स्वागत वक्तव्य से किया। हिमायतनगर ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण किया गया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुशील संचेती, तेरापंथ महिला

मंडल की अध्यक्ष नमिता सिंधी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, हैदराबाद के अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल ने आचार्य श्री दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य पर अपने भावों की अभिव्यक्ति उपस्थित धर्म सभा में प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मंत्री नीरज सुराणा ने किया।

जयपुर

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का 53वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस) 'महाश्रमणोस्तु मंगलम् 3.0' के रूप में श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। यह आयोजन श्रीमद् जयाचार्य स्मारक (साधना का प्रज्ञापीठ), रामनिवास बाग, जयपुर में सम्पन्न हुआ। तेयुप जयपुर अध्यक्ष श्री रवि छाजेड़ के नेतृत्व में युवा साथियों ने गुरुचरणों में त्याग-प्रत्याख्यान स्वीकार कर आध्यात्मिक भावों की अभिव्यक्ति की। साथ ही भजनों के संगान के माध्यम से आचार्यश्री के प्रति अपनी श्रद्धा, भक्ति एवं अभिवंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम का वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा, गुरु भक्ति एवं युवा उत्साह से ओतप्रोत रहा। युवाओं ने आचार्यश्री के आदर्शों को जीवन में अपनाने का संकल्प लेते हुए दीक्षा दिवस को प्रेरणादायी रूप में मनाया।

सिरियारी

आचार्यश्री भिक्षु समाधिस्थल संस्थान सिरियारी के भिक्षु ऑडिटोरियम में तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के 65 वां जन्मदिवस, 53 वां दीक्षा दिवस एवं 17 वा पदाभिषेक समारोह का संयुक्त आयोजन शासन श्री मुनि मुनिव्रतजी स्वामी के सानिध्य तथा मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' के निर्देशन में हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया। साथ ही भिक्षु भक्ति का भी कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम में मंगलाचरण के पश्चात् मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा- वर्तमान भारत के गौरव है आचार्य महाश्रमण। जो एक धर्म सम्प्रदाय के आचार्य होते हुए भी मानव मात्र के पथ दर्शक है। इन्होंने पूर्वांचल और दक्षिणांचल की प्रलम्ब पदयात्रा के द्वारा जनमानस को सद्भावना और नशामुक्त जीवन का संदेश दिया है। इनकी पदयात्राएँ केवल कदमों की नहीं करुणा और नैतिकता के संदेश की यात्राएँ हैं। इनकी साधना मानवता के कल्याण

को समर्पित है। मुनि अमन ने आगे कहा- आचार्य महाश्रमण का समय प्रबंधन व नेतृत्व क्षमता अद्भूत है। हर परिस्थिति में संतुलन, सरलता और संवेदना बनाए रखना ही इनका स्वभाव है।

ऐसे महान संत को पाकर भारतवासी अपने भाग्य की सराहना करके प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। इस अवसर पर मुनि गिरिशकुमारजी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए अपनी श्रद्धा समर्पित की। विद्याभूमि राणावास के अध्यक्ष मोहन गादिया भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी के उपाध्यक्ष उतमचंद सुखलेचा ने संस्थान की ओर से स्वागत अभिनंदन किया। राणावास कॉलेज के प्रिंसिपल जम्बरसिंह राजपुरोहित विद्या संस्थान छात्राओं ने समूह स्वर में अपनी भावना प्रस्तुति की कार्यक्रम के पश्चात् अतिथियों का दुपट्टा व प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन पाली से समागत राहुल बालड़ ने किया।

नागपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद नागपुर द्वारा परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 53 वें दीक्षा दिवस (युवा दिवस) के पावन अवसर पर 'महाश्रमणोस्तु मंगलम् 3.0' एवं आचार्य श्री भिक्षु के चरणों में अपनी श्रद्धा अर्पित की एवं आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया। कार्यक्रम में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा से अध्यक्ष विजय रांका, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष नितेश छाजेड आदि की उपस्थिति रही।

होसुर

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 के मंगल सानिध्य में तेरापंथ सभा होसुर के तत्वावधान में आचार्य श्री महाश्रमण का 53 वां दीक्षा दिवस कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा संयम का सुख भाग्यशाली को ही मिलता है, व्यक्ति जितना असंयम से बचे बचने का प्रयास करना चाहिए तथा अपने भीतर संयम के भावों को बढ़ाते रहना चाहिए। मुनिश्री ने आगे कहा आचार्य महाश्रमण ने 12 वर्ष की उम्र में गुरुदेव तुलसी की आज्ञा से मंत्री मुनि सुमेरमल जी लाडनू के कर कमलों से आज के

दिन मुनि दीक्षा स्वीकार की थी। आज 53 वां दीक्षा दिवस मनाया जा रहा है इससे हमें संयम की चेतना को जगाने की प्रेरणा लेनी चाहिए। मुनि श्री ने प्रेरणा देते हुए कहा प्रतिदिन किसी भी एक वस्तु का त्याग अवश्य करें। इस तरह अनावश्यक असंयम के पाप से बचा जा सकता है। आज के दिन श्रावक समाज 12 व्रत को धारण करने का संकल्प लें। मुनि आदित्य कुमार ने जय महाश्रमण गुरुराज भक्ति गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अर्हत वंदना से हुआ। महाश्रमण अष्टकम का संगान शांतिबाई जैन, स्वीटी बाबेल ने किया। महिला मंडल में स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सुनैना नाहर ने विचार प्रस्तुत किया। मंगल बाफना ने स्वागत भाषण किया। ज्ञानशाला की तरफ से दक्ष सेठिया, गर्व नाहर, गरिमा हर्ष पीपाड़ा, वर्धन बाफना, धृति बाफना, झलक बाबेल ने शानदार प्रस्तुति दी। नम्रता सेठिया एवं निकिता बाफना ने कविता पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन विनय सेठिया ने किया।

गंगाशहर

परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 53वें दीक्षा दिवस को 'युवा दिवस' के रूप में बोधरा भवन में श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम मुनि अमृत कुमार जी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। मुनि अमृत कुमार जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में गुरुदेव के जीवन एवं तप की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि दीक्षा का उद्देश्य अज्ञात को ज्ञात करना, जीवन का उद्धार करना तथा आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना है। उन्होंने कहा कि बिना आंतरिक परिवर्तन के दीक्षा का कोई अर्थ नहीं होता। मुनि उपशम कुमार जी ने भी गुरुदेव के दीक्षा दिवस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए अभिवंदना अर्पित की। तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री मांगीलाल बोथरा ने बताया कि देशभर में तेरापंथ युवक परिषद द्वारा गुरुदेव के दीक्षा दिवस को 'युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उपाध्यक्ष देवेन्द्र डागा ने बताया कि इस अवसर पर तेरापंथ सभा के जैन लूणकरण छाजेड़, तेरापंथ महिला मंडल की मीनाक्षी आंचलिया, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के धर्मेन्द्र डाकलिया एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के नारायण चोपड़ा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

मुनि प्रसन्न कुमार जी के प्रति हृदयोद्गार

मुनि प्रसन्न कुमार जी एक दबंग, साहसी और निर्भीक संत थे

● मुनि सिद्ध प्रज्ञ ●

तेरापंथ धर्म संघ में प्रथम बंधु त्रिपुटी के रूप में मुनि स्वरूपचंद जी मुनि भीमराज जी और मुनि जितमल जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है। मेने उन्हें देखा नहीं पर आचार्य तुलसी के साशन काल में हुवे इन तीन संतों को एक साथ देखने का मौका मिला। तेरापंथ में लगभग 50 वर्षों तक बंधु त्रिपुटी मुनि संजय कुमार जी मुनि प्रकाश कुमार जी और मुनि प्रसन्न कुमार जी का कालमान रहा। मुनि प्रसन्न कुमार जी का जीवन साधना, सेवा, समर्पण और सरलता का अद्भुत संगम था।

वे केवल एक संत नहीं, बल्कि धर्मसंघ के प्रति पूर्ण निष्ठावान, अनुशासनप्रिय और आत्मीय व्यक्तित्व

के धनी थे। मुनि प्रसन्न कुमार जी एक दबंग, साहसी और निर्भीक संत थे। अपने संयम जीवन में तप, त्याग और साधना के माध्यम से उन्होंने अनगिनत आत्माओं को धर्ममार्ग की प्रेरणा प्रदान की। उनका व्यवहार अत्यंत विनम्र, मधुर और प्रभावशाली था।

वे जहाँ भी रहे, वहाँ धर्म, संस्कार और जागृति का वातावरण निर्मित हुआ। मुनिश्री का अचानक देवलोक गमन धर्मसंघ के लिए अपूरणीय क्षति है। उनके व्यक्तित्व में साधुता की गरिमा, चिंतन की गहराई और करुणा का अद्भुत समन्वय था। 'संत शरीर से दूर हो सकते हैं, लेकिन उनके संस्कार, उनके विचार और उनका तपस्वी जीवन सदैव हमारे

हृदय में जीवित रहता है। मुनि प्रसन्न कुमार जी का जीवन संयम-साधना की उज्ज्वल मिसाल था। उनके चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि। अंत में मुनि सिद्ध प्रज्ञ जी ने दिवंगत संत के प्रति भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि हम सभी उनके आदर्शों को आत्मसात कर अपने जीवन को धर्ममय बनाने का प्रयास करें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मुनि प्रसन्न कुमार जी सबसे बड़ी विशेषता उनका निर्भीक, स्पष्टवादी और प्रभावशाली व्यक्तित्व था। वे साधु जीवन की मर्यादाओं का दृढ़ता से पालन करने वाले अनुशासनप्रिय संत थे। उनके जीवन में साधना, सेवा, तप और त्याग का अद्भुत समन्वय दिखाई देता था।

वर्षीतप अभिनंदन समारोह का आयोजन

गुवाहाटी।

अक्षय तृतीया के पावन पर्व के उपलक्ष्य पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के तत्वावधान में सभी संघीय संस्थाओं के सहयोग से स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में वर्षीतप अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ तेरापंथी सभा के वरिष्ठ सहमंत्री एवं संस्कारक राकेश जैन के द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। तत्पश्चात तेरापंथी सभा के कर्मठ मंत्री राजकुमार बैद ने अपने

स्वागत वक्तव्य में सभी तपस्विनी बहनों के तप की अनुमोदना की एवं उनके भावी आध्यात्मिक जीवन की मंगल कामना की। तत्पश्चात जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष विजय कुमार चोपड़ा, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री सुचित्रा छाजेड़, तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री हितेश चोपड़ा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के उपाध्यक्ष राजेश बोथरा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संजय चौरडिया के वक्तव्य रहे। कार्यक्रम का संचालन कार्यकारिणी सदस्य राजेश जमड़ ने किया।

तुलसी गुरु मुख कमल से - संयम व्रत स्वीकार

● मुनि कमल कुमार ●

तुलसी गुरु मुख कमल से - संयम व्रत स्वीकार मुनि प्रसन्न जी बन गये - तेरापंथ अणुगार ॥

सोहन मुनिवर साथ में - लंबा किया प्रवास अध्ययन सेवा से किया - अपना खूब विकास ॥

मुनि संजय प्रकाश के - सगे भ्रात थे आप चाचा मुनिवर धैर्य के - धर्म संघ में छाप ॥

महाश्रमण गुरुदेव की - आज्ञा के अनुसार पहुँच गये मुनि द्वय कुशल - भीलवाड़ा मझार ॥

चलते फिरते कर लिया - भव-भव से कल्याण करते हैं यह कामना - शीघ्र वरें शिवस्थान ॥

पृष्ठ 1 का शेष

विकसित भारत के...

अभिवंदना एवं पाथेय: कार्यक्रम के अंत में आचार्य प्रवर ने आलोक कुमार के आगमन को सराहा और उन्हें संस्कारों के उन्नयन हेतु निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा दी।

श्रुत की आराधना...

साथ ही दूसरों को प्रतिबोध देकर उन्हें भी गलत मार्ग से हटाकर मोक्ष की ओर अग्रसर करने में सहायक बनता है।

३.अध्यात्म की सेवा : पात्र और योग्य जिज्ञासुओं को ज्ञान प्रदान करना भी धर्मसंघ की एक महान सेवा है।

विद्या के साथ विनय और मौन का

संगम: ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त आने वाले विकारों के प्रति सचेत करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि श्रुत होने



काम-अर्थ संसार है, 'धर्म-मोक्ष' ही जीवन का सार -आचार्यश्री महाश्रमण

पर भी अहंकार का प्रवेश नहीं होना चाहिए। विद्या तभी शोभित होती है जब उसके साथ 'विनय' का योग हो।

पूज्य प्रवर ने विशेष रूप से 'मौन' की प्रेरणा देते हुए फरमाया कि ज्ञान का प्रदर्शन या दिखावा नहीं करना चाहिए; आवश्यकता होने पर ही बोलना चाहिए।

जिज्ञासा समाधान एवं श्रद्धाभिव्यक्ति: मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्य प्रवर ने चारित्रात्माओं की विविध जिज्ञासाओं का तात्त्विक समाधान किया।

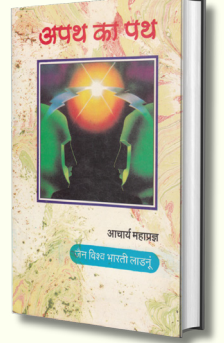
गुरुदेव की अभिवंदना के क्रम में साध्वी स्तुतिप्रभा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया और साध्वी वीरप्रभा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। नन्हे बालक परम और पार्थ बच्छावत ने भी अपनी प्रस्तुति से आराध्य के चरणों में वंदना अर्पित की।

बोलती किताब

अपथ का पथ

आत्मदर्शन और आध्यात्मिक जागरण की प्रेरक यात्रा

पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित पुस्तक "अपथ का पथ" अध्यात्म और आत्मदर्शन की गहन साधना को सरल और प्रेरक रूप में प्रस्तुत करने वाली एक महत्वपूर्ण कृति है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक अध्यात्म की सूक्ष्म अनुभूतियों, प्रेक्षाध्यान की भावना और आगमिक सूत्रों की व्याख्या के माध्यम से जीवन को समझने की नई दृष्टि प्रदान करती है। इसमें आत्मचेतना, विवेक और आंतरिक जागरण से जुड़े अनेक सूत्रों को सहज भाषा में प्रस्तुत किया गया है, जिससे पाठक आध्यात्मिक चिंतन की गहराइयों तक पहुँचने का अनुभव करता है।



यह कृति मनुष्य को बाहरी आकर्षणों और आसक्तियों से ऊपर उठकर अपने भीतर झाँकने की प्रेरणा देती है। इसमें बताया गया है कि जीवन में दुःख का वास्तविक कारण बाहरी वस्तुएँ नहीं, बल्कि उनके प्रति होने वाली आसक्ति और मोह है। जब व्यक्ति विवेक की दृष्टि से अपने भीतर के भावों को देखना सीखता है, तब वह धीरे-धीरे राग-द्वेष और पक्षपात से मुक्त होकर समता और संतुलन की दिशा में अग्रसर होता है। यही आत्मदर्शन का मार्ग व्यक्ति को आंतरिक शांति और संतुलन का अनुभव कराता है।

पुस्तक में यह संदेश भी निहित है कि सच्चा साधक वही है जो स्वयं को पहचानने का प्रयास करता है और अपने भीतर स्थित चेतना से जुड़ने का अभ्यास करता है। जब मनुष्य अपने अस्तित्व की गहराइयों में उतरता है, तब उसे यह अनुभव होने लगता है कि जीवन का वास्तविक केंद्र बाहर नहीं, बल्कि उसके भीतर है। आत्मचिंतन और साधना के माध्यम से व्यक्ति अपने मन, विचारों और भावनाओं को समझने लगता है और धीरे-धीरे उसका दृष्टिकोण अधिक व्यापक, शांत और संतुलित बनता जाता है।

यह कृति पाठक को वर्तमान क्षण में जागरूक होकर जीने, अपने भीतर की चेतना को पहचानने और जीवन को आध्यात्मिक दृष्टि से देखने की प्रेरणा देती है। इसकी गहन लेकिन सहज शैली पाठक के मन में आत्मअन्वेषण की जिज्ञासा जगाती है। जब व्यक्ति इन विचारों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है, तब उसके भीतर जागरूकता, विवेक और आंतरिक संतुलन का विकास होता है, जो उसे एक अधिक सार्थक और शांतिपूर्ण जीवन की दिशा में अग्रसर करता है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए अभी डाउनलोड करें

सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप

Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

आदर्श साहित्य विभाग, जैन विश्व भारती लाडनू

+91 87420 04849

books.jvbharati.org

books@jvbharati.org

तेरापंथ-मेरा पंथ कार्यशाला का आयोजन

हासन।

स्थानीय तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशाजी ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में पूज्य गुरुदेव के जन्मोत्सव व पट्टोत्सव कार्यक्रम के साथ ही तेरापंथ - मेरा पंथ कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। सभाध्यक्ष सोहनलाल तातेड़ द्वारा सभी का स्वागत किया गया। साध्वी पुण्ययशाजी ने कहा कि आचार्य श्री भिक्षु के सिद्धांतों को सही रूप से समझने की दिशा में इस तरह की ज्ञानवर्धक कार्यशालाओं के आयोजन को समय की जरूरत और परिणाम जनक बताया, सिद्धांतों को समझ

कर उनके अनुसार चलना होगा। साध्वी विनितयशाजी, साध्वी वर्धमानयशाजी एवं साध्वी बोधिप्रभाजी ने भी तेरापंथ का उद्भव, स्वामीजी की साधना तथा तेरापंथ की मर्यादाओं पर प्रकाश डाला। कार्यशाला में बैंगलोर से पधारे मुख्य प्रशिक्षक प्रवक्ता उपासक महेंद्रकुमार दक द्वारा विस्तृत रूप से दान, दया, धर्म, पुण्य, हृदय परिवर्तन, मूर्ति पूजा आदि विषयों पर भिक्षु स्वामी के सिद्धांतों की सम्यक् व्याख्या की गई एवं इस बारे में प्राप्त सभी की जिज्ञासा का समाधान किया गया। संचालन मलनाड आंचलिक सभा अध्यक्ष महावीर भंसाली तथा आभार ज्ञापन विमल कोठारी द्वारा किया गया।

भवसागर तैर लिया तो अब किनारे पर क्यों खड़े हो ? प्रमाद छोड़कर पार उतरो : आचार्यश्री महाश्रमण

'किनारे पर क्यों खड़े हो' विषय पर शांतिदूत की ओजस्वी देशना; मुमुक्षु जिनाज्ञा को प्राप्त हुई साधना की स्वीकृति

लाडनू।

06 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने चतुर्विध धर्मसंघ को 'त्वरा' (शीघ्रता) करने का पावन संदेश दिया। आचार्यश्री ने भगवान महावीर और मुनि गौतम के संवाद के माध्यम से जीवन के अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रमाद त्यागने की प्रेरणा दी।

गौतम! अब किनारे पर मत रुको :

आचार्य प्रवर ने फरमाया कि भगवान महावीर मुनि गौतम को संबोधित करते हुए कह रहे हैं— 'हे गौतम! तुमने संसार रूपी महान समुद्र को तो तैर लिया है, अब तुम किनारे पर आकर क्यों खड़े हो? पार पहुँचने के लिए थोड़ा और पराक्रम करो और क्षण भर भी प्रमाद मत करो।' आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि यहाँ दो प्रकार के समुद्र हैं— पहला जन्म-मरण की परंपरा वाला 'भव



सागर' और दूसरा 'कर्म रूपी अर्णव'। चूँकि मुनि गौतम का यह अंतिम भव था, इसलिए भगवान उन्हें शेष कर्मों को भी शीघ्र काट लेने का निर्देश दे रहे हैं।

संयम बनाम प्राण: साधना की सर्वोच्चता : चारित्रात्माओं को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने अत्यंत

महत्वपूर्ण पाठ्य प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में कभी भी साधुपन या संन्यास छोड़ने की भावना नहीं आनी चाहिए। गुरुदेव ने आह्वान किया।

१. संयम रूपी रत्न को हर कठिन परिस्थिति में सुरक्षित रखें।

२. यदि कभी प्राण और संयम में से किसी एक को चुनना पड़े, तो साधु को सहर्ष संयम का चुनाव करना चाहिए।

३. यह मनोबल रहे कि 'प्राण भले चले जाएं, पर मेरा साधुपन न जाए।' **मुमुक्षु दीक्षा की स्वीकृति एवं अन्य कार्यक्रम :** मंगल प्रवचन के दौरान एक

”

प्राण जाए पर संयम
न जाए

-आचार्यश्री महाश्रमण

विशेष आध्यात्मिक प्रसंग तब आया जब वैरागण जिनाज्ञा ने पूज्य प्रवर के समक्ष अपनी उत्कृष्ट भावनाओं की अभिव्यक्ति दी।

आचार्य प्रवर ने कृपापूर्वक जिनाज्ञा को मुमुक्षु रूप में साधना करने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

इसके उपरान्त, आचार्यश्री ने चारित्रात्माओं की विविध जिज्ञासाओं का समाधान किया। गुरुदेव के जन्मोत्सव और पट्टोत्सव के उपलक्ष्य में वर्धापना का क्रम आज भी जारी रहा, जिसमें साधु-साधवियों ने अपनी श्रद्धापूर्ण प्रस्तुतियाँ अर्पित कीं।

विनम्रता ही ज्ञान का द्वार, अहंकार और आलस्य हैं शिक्षा के प्रबल शत्रु : आचार्यश्री महाश्रमण

स्वाध्याय के समान कोई तप नहीं— योगक्षेम वर्ष में बहुश्रुत बनने हेतु शांतिदूत का आह्वान

लाडनू।

07 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने 'शिक्षा के बाधक तत्त्व' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने श्रुत (ज्ञान) की महिमा गाते हुए स्पष्ट किया कि बहुश्रुत होना जीवन की एक महान उपलब्धि है, जिसे केवल विनम्रता और पुरुषार्थ से ही पाया जा सकता है।

स्वाध्याय : सर्वश्रेष्ठ तप और श्रुत की परंपरा : आचार्य प्रवर ने शास्त्रों का उल्लेख करते हुए फरमाया कि बाह्य और आभ्यंतर भेदों वाले बारह प्रकार के तपों में स्वाध्याय के समान कोई दूसरा तप न हुआ है और न होगा। पूज्य प्रवर ने आचार्य भिक्षु का उदाहरण देते हुए कहा कि धर्मसंघ में अध्ययन-अध्यापन की धारा अविच्छिन्न चलनी चाहिए। भक्तिपूर्वक श्रुत की आराधना करना



साक्षात् जिनेश्वर भगवान की आराधना के तुल्य है।

महापुरुषों के बहुश्रुत का स्मरण: योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत ज्ञान विकास का आह्वान करते हुए पूज्य प्रवर ने शासन के महान श्रुतधरों का स्मरण किया।

उन्होंने श्रीमद जयाचार्य की प्रतिभा, आचार्य श्री भिक्षु की प्रज्ञा और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के आगम संपादन में अद्वितीय योगदान का उल्लेख किया। आचार्यश्री ने मुनि तुलसी की पाठशाला के यशस्वी शिष्यों—मुनि नथमल जी

”

श्रुत की
आराधना ही जिनेश्वर
की भक्ति

-आचार्यश्री महाश्रमण

(टमकोर) और मुनि बुद्धमल जी स्वामी के ज्ञान विकास को वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बताया।

सावधान! ये पांच तत्व रोकते हैं आपकी शिक्षा : आचार्यश्री ने आगमों के आधार पर शिक्षा प्राप्ति में बाधक पांच प्रमुख तत्वों का विस्तार से विवेचन किया:

१. **अहंकार :** विनीत भाव के बिना ज्ञान की प्राप्ति असंभव है। अहंकार ज्ञान के मार्ग का सबसे बड़ा अवरोध है।

२. **क्रोध :** क्रोधी व्यक्ति की एकाग्रता

भंग हो जाती है, जो अधिगम में बाधक है।

३. **प्रमाद :** विकथा और हास्य-विश्राम में समय गंवाने वाला व्यक्ति बहुश्रुत नहीं बन सकता।

४. **रोग :** शारीरिक व्याधि या अस्वस्थता ज्ञान अर्जन में व्यवधान उत्पन्न करती है।

५. **आलस्य :** उत्साह की कमी और आलसी स्वभाव ज्ञान के प्रकाश को रोक देता है। गुरुदेव ने प्रेरणा देते हुए फरमाया कि इन पांच बाधाओं से बचकर जो परिश्रम करता है, वह निश्चित ही बहुश्रुत बन सकता है।

श्रद्धाभिव्यक्ति एवं अभिवंदना : मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वी राजीमती जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। प्रवचन के उपरान्त अनेक साधु-साधवियों ने गीतों और वक्तव्यों के माध्यम से अपने आराध्य की अभ्यर्थना की और पट्टोत्सव के उपलक्ष्य में वंदना की।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

एकन्द्रिय ने कब कहा?

किसी ने कहा- 'एकेन्द्रिय जीव को मारकर पंचेन्द्रिय का पोषण करने से लाभ होता है।'

तब स्वामीजी बोले- 'किसी ने तुम्हारा अंगोछा' छीनकर ब्राह्मण को दे दिया। उसमें लाभ है या नहीं? अथवा एक आदमी ने किसी से गेहूं के कोठे पर कब्जा कर उसे लुटा दिया, उसमें लाभ होगा या नहीं ?

तब वह बोला- 'इसमें तो लाभ नहीं, मालिक के मन के बिना दिया इसलिए।'

तब स्वामीजी बोले- एकेन्द्रिय ने कब कहा- 'मेरे प्राण लूटकर दूसरों का पोषण करना।' इस न्याय से एकेन्द्रिय को मारने वाला उसके प्राणों की चोरी करता है, इसलिए उसमें लाभ नहीं।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

उत्कृष्ट मंगल 1



शिष्य ने गुरु से प्रश्न किया कि 'मंगल' की चर्चा सब करते हैं। हम किसे उत्कृष्ट मानें? गुरु ने कहा कि धर्म को उत्कृष्ट मंगल मानना चाहिए। शिष्य ने फिर पूछा कि कौन-सा धर्म उत्कृष्ट है? क्या जैन धर्म उत्कृष्ट है अथवा सनातन धर्म अथवा सिख या ईसाई? गुरु ने उत्तर दिया जिसमें 'अहिंसा, संयम और तप' हो। अहिंसा का अर्थ केवल इतना नहीं है कि 'मत मारो', व्यक्ति कायिक हिंसा के साथ वाणी के द्वारा भी अशिष्ट व्यवहार न करें। कटाक्ष न करें, तू-तू मैं-मैं न करें, चुगली आदि न करें। यह वाचिक हिंसा है और सबसे सूक्ष्म में हम जाएं तो आता है 'मन'। मन असीम होता है बाकी सब की तो सीमा होती है। मन क्षण मात्र में सम्पूर्ण लोक का भ्रमण कर पुनः आ सकता है। हमारे अनेक उदाहरण सामने हैं। बड़े-बड़े सूरमा इसी मन के मतंग की चपेट में आ गए। विश्वमित्र का उदाहरण हो या फिर भगवान गौतम का, भगवान महावीर स्वामी के प्रति प्रशस्त राग प्रसन्नचन्द्र राजर्षि का मानसिक युद्ध हो। बाहुबली का थोड़ा-सा अहं हो अथवा अन्य किसी का वहम। यह मन ही सब जगह खेल दिखाता है। मन से ही बंधन है और मन से ही मुक्ति है। अतः अहिंसा का पालन उत्कृष्ट मंगल का द्योतक है।

कितने जागरूक

आचार्य भिक्षु चातुर्मासिक प्रवास के लिए सिरियारी पधारे। उस समय उनका शरीर पूर्ण स्वस्थ था। श्रावण मास के अन्तिम सप्ताह में वे कुछ अस्वस्थ से हुए। दस्त की साधारण-सी शिकायत रहने लगी। औषधि ली, पर कोई लाभ नहीं हुआ। श्रावणी पूर्णिमा के दिन वे स्वयं गोचरी गए और औषधि लाए। भाद्रव मास के कृष्ण पक्ष में अस्वस्थता बनी रही। पर्युषण पर्व आ गया। प्रातःकाल, मध्याह्न और रात्रि- तीनों समय आचार्यश्री भिक्षु प्रवचन करते। संवत्सरी (भाद्रव शुक्ला पंचमी) के दिन उपवास किया। प्यास बहुत लगी। उसे समभाव से सहा।

छठ का दिन- थोड़ा आहार लिया और दवा भी ली। तुरन्त वमन हो गया। तत्काल तीन आहार का त्याग कर दिया।

सप्तमी का दिन- थोड़ा आहार लिया और तुरन्त आहार का त्याग कर दिया।

अष्टमी का दिन- थोड़ा आहार लिया और तत्काल त्याग कर दिया।

मुनि खेतसीजी ने प्रार्थना की- आप आहार का तुरन्त त्याग न किया करें। आचार्य भिक्षु बोले- शरीर क्षीण हो रहा है, वैराग्य बढ़ना ही चाहिए। श्रावक बिरधोजी ने आहार लेने की प्रार्थना की।

आचार्य भिक्षु बोले- आहार की इच्छा नहीं है।

नवमी का दिन- आचार्य भिक्षु आहार का त्याग करने लगे, तब खेतसीजी ने आग्रह किया- मेरे हाथ से कुछ आहार लें। उनके आग्रह को स्वीकार कर अल्प-सा आहार ले तुरन्त त्याग कर दिया।

दशमी का दिन- भारमलजी स्वामी के अनुरोध को स्वीकार कर केवल चालीस चावल और मोठ ले तुरन्त आहार का त्याग कर दिया।

ग्यारस का दिन- दवा और जल के सिवाय शेष आहार का त्याग कर दिया और बोले- आज से आहार लेने का भाव नहीं है।

यह एक निदर्शन है- जागरूकता का और ममत्व-विसर्जन का। वे जीवन के अन्तिम क्षण तक जागरूक बने रहे।

क्या आप जानते हैं?

पपीता आदि फलों पर जरा-सा छिलका रह जाए,

यदि उसमें किंचित् भी हरापन हो तो उसे सचित्त माना जाए।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्षु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

साप्ताहिक प्रेरणा

॥ बाजार की मिठाई का त्याग करे ॥

छोटी समणियों ने नाटिका से किया आराध्य का वंदन

केवल ज्ञान नहीं, आचरण की पवित्रता से ही बनता है व्यक्ति शिक्षाशील : आचार्यश्री महाश्रमण

केवल पुस्तकों से नहीं, अपितु विनय और अक्रोध के आचरण से प्राप्त होती है वास्तविक विद्या

लाडनू।

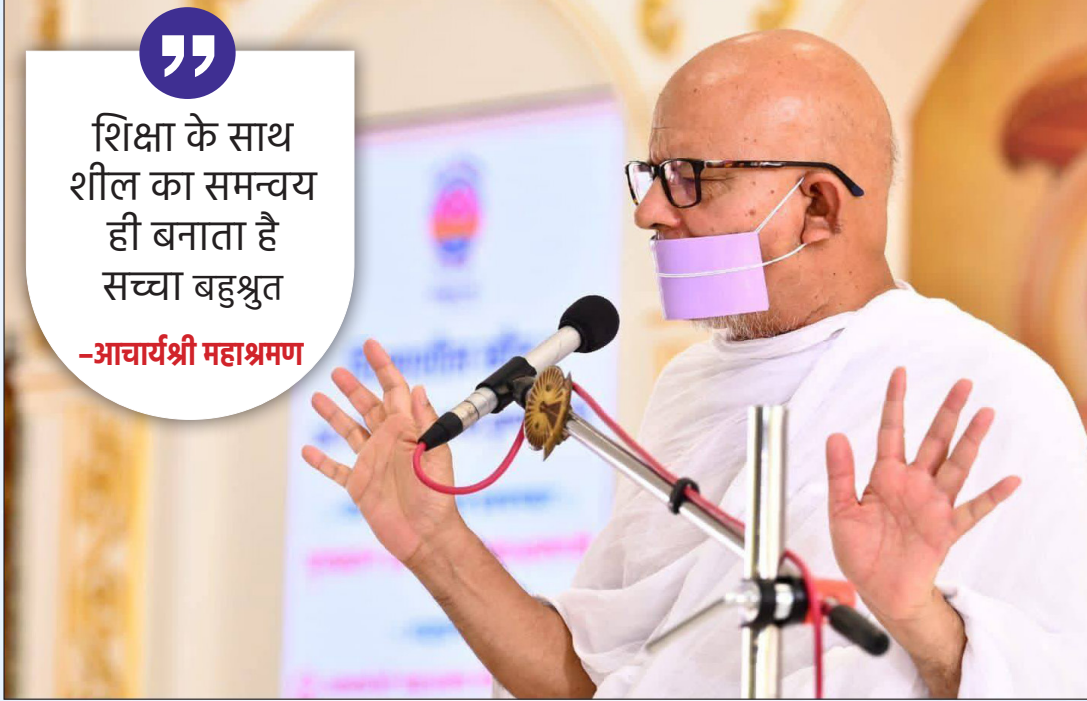
08 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आज 'शिक्षाशील कौन' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से तात्विक देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि बहुश्रुत बनने की पहली सीढ़ी शिक्षा के प्रति अटूट रुचि और आचरणात्मक शुद्धता है।

शिक्षाशील बनने के आठ आगम सम्मत लक्षण :

आचार्य प्रवर ने फरमाया कि केवल अध्ययन में रुचि रखना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक सच्चे शिक्षाशील साधु या श्रावक के लिए आठ गुणों का होना अनिवार्य है:

१. **मर्यादित हास्य** : अधिक हंसी-मजाक में आसक्त न होना और संयमित व्यवहार करना।



शिक्षा के साथ
शील का समन्वय
ही बनाता है
सच्चा बहुश्रुत

-आचार्यश्री महाश्रमण

२. **इन्द्रिय दमन** : मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना, विशेषकर खान-पान में आसक्ति का त्याग।

३. **निरंतर अभ्यास** : ज्ञान को

सीखने के साथ उसका चिंतन और दोहरान करना, ताकि वह विस्मृत न हो। व्याकरण का ज्ञान भाषा की शुद्धता के लिए आवश्यक है।

४. **मर्मगोपन** : किसी की गुप्त बात या दोषों को जगत में प्रकाशित (मर्मोद्घाटन) न करना।

५. **अदोष आचार** : अपने आचरण

को दोषमुक्त रखना और अनुशासन प्रिय बनना।

६. **निर्लोभता** : जीवन में अतिलोलुपता का त्याग करना।

७. **अक्रोध एवं विनय**: क्रोध पर विजय प्राप्त करना और बड़ों के प्रति सदैव विनय भाव रखना।

८. **सत्यरत** : स्वयं और दूसरों के संदर्भ में सदैव सत्य का साथ देना और असत्य भाषण से बचना। जिज्ञासासमाधान एवं आध्यात्मिक प्रस्तुति: मंगल प्रवचन के उपरांत साध्वी जिनप्रभा जी एवं साध्वी श्रुतयशा जी ने 'आराधक-विराधक' विषय पर अपनी सारगर्भित अभिव्यक्ति दी। इस विषय पर आचार्यश्री ने चारित्रात्माओं को जिज्ञासा प्रस्तुत करने का अवसर दिया, जिनका साध्वी द्वय ने समाधान किया।

कार्यक्रम के अंत में छोटी समणी वृन्द ने एक रोचक नाटिका के माध्यम से अपने आराध्य की अभ्यर्थना की, जिसे सभा ने खूब सराहा।

योगक्षेम चित्रमय झलकियां

